REFLECTIONS
2019-2020

Deen Dayal Upadhyaya College
(University of Delhi)

Reflections 2019

Dr. Anurag Mishra
Convenor
Magazine Committee

Amrisha
Editor (English)

Dipanshu
Fine-Arts Head

Durgesh Kumar
Editor (Hindi)

Devansh Dalmia
Photography Head

Abhay Shukla
Co-Editor (Hindi)

Shreesh Sharma
Co-Editor (English)

Vaibhav Saini
Graphics Head

Nishant Sharma
Graphics Head

CONTENTS

1 Message from the Principal

2 Convenor's Note

3 Editorial

4 Student Achievements

5 Department Activities

6 Indic thought

7 Revisiting Panchtantra

8 वैदिक बनाम आधुनिक

9 Teachers' Poetry

10 Student Societies

11 Creative Writing Part - 1

12 Art Gallery

13 रचनात्मक लेखन भाग – २

14 Photo Gallery

Background by:
Vansh Sharma CS (H) 1st Year

Message From The Principal

It gives me immense pleasure to write a few words of prologue for the latest issue of our in-house college magazine 'Reflections- 2019'. This magazine is a catalogue of the creative caliber of our DDUC family, which has hardly dimmed amidst the challenges of the current pandemic.

The college has stepped into yet another year of academic excellence with standards flying high. I am proud of the achievements of our students and the rapid progress of our institution in all spheres. The college has carried a name for itself in its pursuit of a holistic and responsible development and it shows up in the NIRF 2018 rankings where we stand 13th pan India.

An institution does not merely consist of great buildings and instruments. It is made by its fellows- students, teachers, administrators and supporting staff. It is a matter of profound privilege for me to be heading this institute in the companionship of some outstanding fellows and batch-after-batch of dedicated students. While we are still comprehending the changes that this pandemic has brought into our lives, both at personal and professional levels, I am highly hopeful that with the combined efforts of our students and teachers, we will pull through these trying times too by developing new and effective pedagogy. The spirit of our institution is unsurmountable and no virus can slow us down. In the words of Pundit Deen Dayal Upadhyaya, "strength lies not in unrestrained behaviour but in well-regulated action". I can proudly say that we as a college imbibe and practice these valuable words and will continue to do so, to create the society our forefathers dreamt of.

Dr. Hemchand Jain
Acting Principal

Convenor's Note

"परिवर्तन संसार का नियम है", अनंत कालों से चला आ रहा ये कथन आज भी जड़-चेतन के किसी भी सामयिक-असामयिक बदलाव को सटीकता से संक्षिप्त कर देता है। बात अगर इसके मार्गों की हो, तो परिवर्तन का रथ हमेशा किसी सपाट-समतल रास्तों से नहीं गुजरता है। इसके रास्तों में कभी पत्थरों व गड्ढों की उठा-पटक रहती है तो कभी पुष्प-आच्छादित स्थान मिलते हैं, और परिवर्तन का यात्रा-वृतांत हमें जीवन के अनेकों सिख दे जाता है। यहाँ पर आवश्यकता होती है एक ऐसे माध्यम कि जो इसे और इसकी कहानियों को एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी तक ले जाने में इसकी मदद करे। तो इन परिवर्तनों के सतत समूहन के लिये कला तथा साहित्य दो महत्वपूर्ण जरिया हैं, चूँकि ये दोनों ऐसे शाश्वत माध्यम हैं जिनके प्रतिरूप भिन्न हो सकते हैं किंतु लक्ष्य नहीं। जरा सोचिए यदि भित्ति-चित्र, शिल्प कला विकसित नहीं हुई होती तो क्या हम मोहनजोदड़ो की सभ्यता के बारे में पूर्ण खनन के पश्चात भी कुछ समझ पाते?

साहित्य जहाँ हमें आरुणि जैसे गुरु-शिष्य परंपरा के अधिवाहक होने की शिक्षा देता है, व अष्टावक्र जैसे जिज्ञासु होने को भी अग्रसारित करता है, तो वहीं ?कला में रमने वाले 'सल्वाडोर डाली' जैसे जिंदादिल और मलंग होते चले जाते हैं। हमारे महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'Reflections' इन्हीं भावनाओं को समेटते हुए, संपूर्ण वर्ष की झांकी प्रस्तुत करता है। विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी हमारी और छात्र-संपादकों के सतत प्रयास से बनकर तैयार हुई नवीन अंक 'Reflections 2019-20' आपके सामने नए अंदाज और नए कलेवर में प्रस्तुत है।

वैश्विक आपदा की वजह से जब संपूर्ण विश्व ने अपना कामकाजी तरीका बदल लिया है, तो हम भी मुद्रण संभव न होने के कारण इस वर्ष नया प्रयोग करते हुए 'E - Magazine' प्रकाशित कर रहे हैं। इसके लिये भी हम समान प्रतिक्रिया की आशा रखते हैं।

अंत में, मैं इन नये प्रयोगों को सदा उत्साहित करने के लिए तथा हमेशा सहयोग के लिए प्रधानाचार्य डॉ हेमचंद जैन जी को धन्यवाद व्यक्त करता हूँ, एवं पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिये संपादक मंडल के सभी सदस्यों को शुभकामनाएं देता हूँ।

धन्यवाद

डॉ अनुराग मिश्रा

Associate Professor (Dept. Of Electronics)

शिक्षक संयोजक(Reflections 2019-20)

Editorial

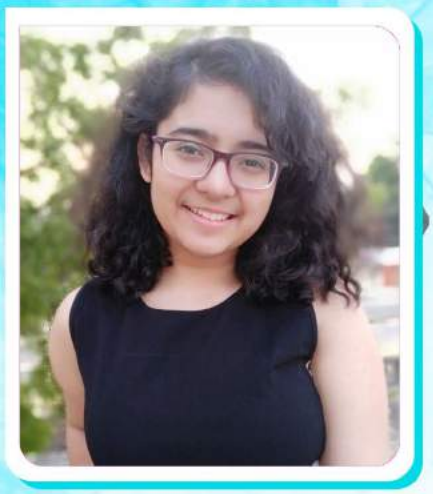

Dear reader,
I hope this letter finds you safe and healthy. The idea of Reflections is to compile the musings and ponderings of the students and teachers. Since most of the magazine was compiled before the coronavirus outbreak, you'll notice how it hardly talks about the strange and overbearing predicament that the pandemic has put us under, yet it tries to and even somewhat succeeds in giving us some relief from it. This is something only art is capable of. Merely by giving us a sense of familiarity in this age of dysphoria and alienation, it provides unexpected solace to our hearts and to most of us, those things are the small links to life itself.

Though Reflections is an open-theme magazine, once you go through the write-ups, you'll notice the spiritual/didactic interconnection in almost all of them, which is purely coincidental. The entries reflect a unanimous anti-establishment stance; from commentary on modern-day feminism to calling out toxic positivity, from a sharp critique of the authoritarianism to resistance against repressive social norms, from questioning existent socio-political structural monoliths like family, laws, nation, community, caste, government, religion, god, to envisioning a new world full of love, this magazine is all about creating new safe spaces to practice individuality, and about marginalized narratives owning those spaces. This issue urges us to look beyond our traditional roles as individuals. It's a testimony to the existence of a living, breathing, thinking, rational, argumentative human within each of us. In times when such subversion is dismissed as an impulsive act of vigilantism, the students of our college have tried to create a niche for and validate the idea as a conscious, thoughtful choice. Resistance, if reduced to a fashion, doesn't take long to fizzle out and our writers appear to be aware of that. I take immense pride in my fellows for their carefully meditated, boldly articulated, creative thoughts that are likely to bring a tangible change.

We live in an age of post-truth communicative abundance. Ironically in a very matrix-esque style, almost every institution in our lives is being influenced by a network of unfeeling, automated algorithms. The elements of subjective reality and trust are slowly depleting, taking us further away from general empathy and humanity. This is where literature and art comes in. it humanizes the dehumanized, gives agency to the disenfranchised, and acts as an antidote to human suffering. Acknowledgement of sorrow in and of itself is an act of bravery, be it ours or somebody else's. Art allows you the space to do that and paves the way to a lesser evil future. I hope this magazine contributes to the same essential purpose.

I feel deeply humbled to be entrusted with the responsibility of co-editing this edition of Reflections. I express my deepest gratitude to the editorial team for their patience, dexterity and perseverance. I thank Dr. Anurag Mishra for his ever-guiding guardian presence. My heartfelt congratulations to all the featured artists!
Love and hope to all,

~ Amrisha
English Editor
B.A. (Prog)
2nd Year

Editorial

साहित्य एक ऐसा अद्भुत सुधा-रस है, जिसके लिए अगर समुद्र-मंथन भी किया जाए तो इस दौरान किसी हलाहल विष के निकलने की किंचित मात्र भी सम्भावना नहीं है, अपितु इस क्रम में आपको अनेको-अनेक रत्नों की प्राप्ति होगी, और मंथन के दौरान की जाने वाली मानसिक मेहनत आपको स्फूर्त रखेगी। स्वयं दिनकर जी द्वारा रश्मिरथी के भूमिका में कथा-काव्य के सन्दर्भ में कहा गया है कि " कुछ लोग आजकल बाजारों से ओट्स(जई) मंगा कर खाया करते हैं। आंशिक तुलना में यह गीत और मुक्तक का आनंद है। मगर कथाकाव्य का आनंद खेतों में देशी पद्धति से जई उपजाकर खाने के सामान है, यानि इस पद्धति से जई के दाने तो मिलते हीं हैं, कुछ घास और भूसा भी हाथ आता है, कुछ लहलहाती हुई हरियाली देखने का भी सुख प्राप्त होता है, और साथ में हल चलाने में जो मेहनत पड़ती है उससे कुछ तंदुरुस्ती भी बनती है।"

अब इसे कवि की कोड़ी कल्पना कहें, लेखकों की अति-कर्मण्यता, शायरों के रूहानी ख्वाब याउपन्यासकारों की अति-काल्पनिकता कहें, गाहे-वगाहे हम इन्हीं चीजों से घिरे हैं। अब हमारी अक्षमता हीं है कि हम इन बातों को जानते हुए भी इनके गुढ़ रहस्यों को जानने का प्रयत्न नहीं करते।जब इन विषम परिस्थितियों में संपूर्ण विश्व एक अनसुलझे से घातक जाल में फंसा हुआ है, तब जहाँ आयुर्विज्ञान मनुष्य को हर-संभव जीवित रखने का प्रयास करते हुए मनुष्यता की एक नई अद्भुत मिसाल पेश की है। तो वहीं साहित्य, प्रौद्योगिकी व नई तकनीक ने अपने अनेको-अनेक प्रारूप में मनुष्य के मनुष्यता को स्फूर्त रखा है।
किसी भी भाषा के कुछ विशिष्ट शब्दों में बीतते कालखंड के साथ दो घटनाएं घटित होती हैं या हो सकती है, उनके शब्द के उपयोग तथा अर्थ का फैलाव या उनमें सिमटाव। अब अर्थ में फैलाव के उदाहरण के लिए 'तेल' लेते हैं, इसका शाब्दिक अर्थ होता है तिल को दबा कर निकाला जाने वाला तरल पदार्थ, लेकिन इस शब्द के उपयोग का दायरा इतना विस्तृत है कि खाने वाले तेल व लगाने वाले तेल से लेकर गाड़ी में ईंधन के रूप में प्रयुक्त तरल पदार्थ को भी तेल हीं कहते हैं। लेकिन वहीं अगर सिमटाव के लिए उदाहरण में 'खग' को ले तो इसका शाब्दिक अर्थ उन चीजों से होता है जो आकाश में विचरण कर सकते हैं, लेकिन इसका उपयोग हम सिर्फ पक्षियों के समानार्थी के रूप में ही करते हैं, जबकि आकाश में विचरण तो हवाई जहाज और लड़ाकू विमान भी करते हैं।

ठीक इसी प्रकार बीतते समयों के साथ साहित्य शब्द का अर्थ भी संकुचित हुआ है, लोग साहित्य के दायरे को संकीर्ण समझने की भूल करते हैं। लेकिन सही अर्थों में तो साहित्य दर्शन का तर्क है, इतिहास का प्रमाण है, विज्ञान की भाषा है, एक सभ्यताओं से दूसरे सभ्यताओं तक विचारों के आदान-प्रदान का साधन है। साहित्य के महत्व को परिभाषित करती हुई संस्कृत की एक पंक्ति है-

"साहित्यसंगीतकलविहीनः साक्षात्पशु पुच्छविषाणहीनः"

अर्थात साहित्य, संगीत और कला से विहीन मनुष्य बिना पूँछ और नख वाले पशु के समान है।
साहित्य और कला के इसी समायोजन को प्रतिरूपित करती हुई, हमारी वार्षिक पत्रिका 'Reflections 2019-20' जो कि हमारे संयोजक डॉ० अनुराग मिश्रा सर के निर्देशन में व सभी साथी संपादकों के सामूहिक प्रयास से बनकर तैयार हुई है, आपके सामने प्रस्तुत है।

अंत में मैं अपने सभी साथी संपादकों को उनके निरंतर सहयोग के लिए धन्यवाद देता हूँ।

~ दुर्गेश कुमार
हिंदी - संपादक
B.Sc. (H) Electronics
2nd Year

Student
Achievements

Achievers' Gallery

Vaibhav Singh, **Chetan Goyal**, **Tanuj** and **Jaideep** of Robotics club DDUC won E-Yantra Ideas Competition 2019-2020 with their project idea of **NEXT-GEN VISION KIT**

Shivam Kumar Singh

Course - B.Sc. (H) Electronics

Semester - 4th

Achievement:
Discovered 35 New Asteroids and got certificate from NASA

Achievers' Gallery

Authored and presented paper titled "Memristor Based Cryptographic Information Processing For Secured Communication Systems" at 5th IEEE ICDCS held at Karunya Institute of Technology and Sciences, Coimbatore

Ajay Joshi
B.Sc. (H) Electronics

Sahil
B.Sc. (H) Electronics

Ashutosh Mishra
B.Sc. (H) Electronics

Achievers' Gallery

Mridul Chansoriya

Course - B.Sc. Phy. Sci. Chem.

Achievements:
1st Prize at India Quiz, Shaheed Bhagat Singh College
2nd Prize at Cricket Quiz, Maharaja Agarsen College
2nd Prize at Cricket Quiz, Sri Guru Gobind Singh College of Commerce
3rd Prize at India Quiz, IIT ROPAR
3rd Prize at Cricket Quiz, NSUT

Rishi Suri

Course - B.Sc. (H) Chemistry

Achievements:
1st Prize in Talent Hunt, Commerce Dept, Kalindi College
2nd Prize in Poetry Competition, Shakespeare Society, JDMC
1st Prize in Creative Writing, Electronics Dept, DDUC
3rd Prize in Open Mic, WDC, DDUC

Achievers' Gallery

Bhawana

Course - B.A. (Prog.)

Achievement:
2nd Prize in Essay Writing, Hindi Diwas, DDUC

Sneha R

Course - B.A. (H) English

Achievements:
1st Prize at Verse-O-Magique, Maitreyi College
2nd Prize at Gubbins, Dyal Singh College

Achievers' Gallery

Dhananjay Tanwar

Course - B.M.S.

Achievement:
3rd Prize at Quiz organized by Oriental Bank of Commerce, DDUC

Tanushka Yadav

Course - B.M.S.

Achievements:
1st Prize at The Business Plan Competition, E-Cell, Delhi College of Arts & Commerce
3rd Prize at The Marketing Event, The Fore School of Management

Achievers' Gallery

Abhay Agarwal

Course - B.M.S.

Achievements:
1st Prize at All India Political Parties Meet 2.0, The New Delhi Institute of Management, IP University
1st Prize at The Business Plan Competition, E-Cell, Delhi College of Arts & Commerce
1st Prize at The Group Discussion Event, The Commerce Dept., Kamla Nehru College
3rd Prize at The Marketing Event, The Fore School of Management
The **Best Pitch & Proposal** at the Entrepreneurship Development Program, IIC, AICTE, MHRD"

Gracy

Course - B.A. (H) English

Achievement:
Best Speaker at Verbattle, RICS School of Built Environment, Amity University

Achievers' Gallery

Navneet Singh, Raghvendra Pratap, Ashutosh Mishra and Ekansh Gupta are First Prize winner of Intercollege Hackathon 2020, DDUC and IOT Challenge 2020, DDUC

DEPARTMENT ACTIVITIES

DEPARTMENT OF BOTANY

KALPAVRIKSHA SOCIETY

DEPARTMENT OF CHEMISTRY

COVALENCE SOCIETY

DEPARTMENT OF COMMERCE

COMMUNITY SOCIETY

DEPARTMENT OF COMPUTER SCIENCE

SANGANIKA SOCIETY

DEPARTMENT OF ELECTRONICS

SILIZIUM SOCIETY

DEPARTMENT OF ENGLISH

ZEST SOCIETY

DEPARTMENT OF HUMANITIES

ABHIVYAKTI SOCIETY

DEPARTMENT OF MATHEMATICS

HARISH CHANDRA MATHEMATICAL SOCIETY

DEPARTMENT OF OPERATIONAL RESEARCH

OPTIZONE SOCIETY

DEPARTMENT OF PHYSICS

ARYABHATTA SCIENCE FORUM

DEPARTMENT OF ZOOLOGY

SYNAPSES SOCIETY

Indic Thought

Indic thoughts, a part of Indic traditions, and their academic explanatory tools rooted in the history and social ethos of 'Indons', as termed by Herodotus, the Greek historian, for the residents across the river Sindhu, have been on the margin in the mainstream academia under the impact of colonial education and a Euro-centric focus on studies in the social sciences and literature in post-colonial India. Ideas, ideologies, frameworks, reference points and many other significant tools of scholarly discussions and writings are so much under the influence of Western thought that they not only fail to appreciate the Indian realities in their historicality and contextualized present, but also produce strange results which may at times be contrary to the realities, which lead us to tempered conclusions and altered solutions unfit for our social requirements. The all-pervasive impact of the colonial mind and its hangover in the post-colonial era continues to affect our curriculum and thought, adversely affecting Indian-ness in academic discourse.

It will be apt here to demonstrate , through the role of the Asiatic Society, the knowledge formation in colonial India. It is well known that the Asiatic Society was formed in 1784 in Calcutta by 38 Europeans. There was no Indian member in it; neither was it open for them for the next 40 years. The objective of it was to investigate everything: from nature, geography to forms of government, institutions, science, agriculture, language, etc., to understand the colony and its subjects. It was an institutionalized beginning to orientalize the knowledge, i.e., to interpret India for the British from the colonial lens. The pundits and maulavis were engaged to interpret the texts but they were not part of the decision making; neither were they engaged in the final publication process. Their names, contributions were never recognized. Sanskrit alphabets were translated into roman alphabets with diacritical marks. This transliteration was then adopted by the European academia to learn Sanskrit. It impacted the understanding and interpretation of the Sanskrit texts and of history of India. The contemporary discourse in the social sciences and humanities in the Indian universities has consequently become fragmentary, Oriental and Westernized. The larger subterranean popular praxis and non-bookish discourses have, however, remained Indian and holistic with their local ethos woven into pan-Indic commonalities. They have also been changing to fit the changing structural, technological, topographical and political requirements of the multilingual localities. From the ideational bliss of Rig-Veda to the 'Total Revolution' of Jayaprakash Narayan, it has been a long civilizational history of ideas, open to the new currents of change, but its Indian-ness has refused to be blown over. A strong research based on Indic terminologies and its frames of reference shall not only give due justice to the historical past of the land but shall also impact the way contemporary events and processes are analyzed. It is imperative that the discourse set around the Indic thought is developed and deployed as effective tools for comprehending and interpreting social and political processes. Indic traditions, of which thought is an integral part, underline that a process or phenomena can be understood in numerous ways: Ekam Sat Vipra Bahudha Vadanti (often repeated quote from Upanishads),i.e., truth is one but Sages or learned people call it by different names. This indicates inherent acceptance of a culture of debate in our society. There is celebration of diversity, unlike the idea of tolerance which is European and indicates intolerance.

It is not argued that these are the only set of tools, but it is emphasized that these tools are on the margins and rarely deployed. Though references to Indic texts is quite common in our daily life or even deployed for explaining phenomena at a more general level, they do not find equal mention in the social science texts or higher academic books and research papers. However, a convincing answer would emerge if Indic thought, which is rooted more in the context in which the process emerged, is deployed effectively.

One illustration can be very relevant here, i.e. the definition of dharma which is more often translated as religion. A glance at the true meaning of dharma tells a different story: Dharma is that which upholds, sustains and uplifts; it does not define the object that is being upheld, sustained, or uplifted. It does not imply any specific object (living or inanimate) and thus applies to all possible objects. It represents a 'principle' or a 'quality of being' that can be widely used in a variety of contexts to mean a variety of different ideas. In the 'Karna Parva' of Mahabharat, Krishna explains dharma to Arjuna in the following words: dharanat dharma mityahu dharmo dharayate prajaha Yat syad dharanasamyuktam sa dharma iti nischayaha (dharma sustains the society). Dharma maintains the social order. Dharma ensures well-being and progress of humanity. Dharma is surely that which fulfils these objectives. This was precisely the context and the meaning in which Gandhi underlined that religion and politics are inseparable.
This narrative seeks to retrieve, resurrect and analyse this Indian-ness in her history. It also intends to posit this Indian-ness as the pivot of academic curriculum and of public discourse. The objective is to engage the academics of different disciplines of social sciences on different themes derived primarily from the Indic traditions.

~ Dr. Himanshu Roy
Atal Bihari Vajpeyee Senior Fellow
Nehru Memorial Museum and Library
Teenmurti

Revisiting Panchatantra: A Text that Brought Immortality

In the sixth-century AD, the emperor of ancient Persia, Khusro, known as Anushirvan (the immortal soul), heard about a magical herb which could bring the dead back to life. His wise and trusted ministers informed him that the magical herb and the potion made out of it could be found in the remote land of India. Driven by the desire to become immortal, the emperor sent his physician Burzoe to India. The physician explored the entire country for the magical potion but failed miserably. He eventually came across a wise sage, who suggested that the elixir was neither a plant nor potion. It was, in fact, a book called the Panchatantra, a rich repository of knowledge and hence a source of immortality.

The Indian sage equated foolishness with death and knowledge with immortality. Burzoe took a copy of the Panchatantra to Iran, where it was translated into the Pahlavi language as Kalileh and Dimneh. The Persian version was named after Damanaka and Karataka, two jackals in Vishnu Sharma's text. The eminent historian Firdausi celebrates this story in a chapter titled 'Burzoe brings the book of Kalileh and Dimneh from India' of his eleventh-century epic the Shahnama. Incidentally, during his maiden visit to Iran in 2016, the Indian Prime Minister Narendra Modi released a manuscript of Kalileh and Dimneh. The text symbolized the ancient cultural ties between the two countries.

This sixth-century translation of the Indian text turned out to be immensely popular in Persia. Subsequently, princes in ancient Persia were taught the Panchatantra for its ability to convey the complex lessons of statecraft and good governance through stories. The Pahlavi edition thereupon was translated into Arabic and from Arabic into Hebrew. Thereafter, it was translated from Hebrew into Latin, from Latin into Italian, and from Italian into English. Sir Thomas North, a British judge and translator, introduced the stories of the Panchatantra to the English speaking world in 1570. It was published as The Morall Philosophie of Doni, after the name of the Italian translator. Thus, the English translation of a classical Indian text was carried out much before William Jones and Charles Wilkins translated several Sanskrit texts into English in the 1790s.

The Muslim Caliphs at Baghdad, the seat of the Islamic Empire, also showed great interest in Indian texts. The translation bureau set up by Caliph AlMansour (c.710–75), writes Mona Baker and Gabriela Saldanha in Routledge Encyclopedia of Translation Studies (2009), 'produced translations of Sanskrit texts on astronomy, medicine and mathematics (notably Aryabhata's fifth century Sanskrit treatise), introducing the numeral system of Indian origin into Europe as well as various other Indian algebraic, geometrical, and astronomical concepts. Harunal Rashid (766–809) and Al Mamun (786–833) continued the translation work into the ninth century, but it ceased thereafter as Baghdad began to lose its political power' (453). Ever since its first translation, the Panchatantra has continued to mesmerize the writers all over the world in numerous editions and translations. As Baker and Saldanha argue in the same book that the Panchatantra was probably responsible for the stories of Reynard the Fox, common to many European folk traditions, which were given their finished European form by Goethe. Boccaccio, the great Italian story-teller and writer of Decameron, in all likelihood, was familiar with both the Latin and the Italian translation of Vishnu Sharma's work. There are structural and thematic similarities between his Decameron and the Indian text, especially in the employment of the literary technique of frame story. The Panchatantra and the Jataka tales are some of the earliest texts to use the device of frame narrative in which several stories emanate from one central story. The frame story that originated in India influenced not only Boccaccio but also the 14th-century British poet Chaucer.

Subsequently, Chaucer, who is widely celebrated as the father of English poetry, used this technique in his magnum opus Canterbury Tales, a collection of stories woven around one central story. Thus, the story behind the translation and circulation of the Panchatantra all over the world is as intriguing as the text itself.

Written around 200 B.C., the Panchatantra belongs to the tradition of Nitishastra – a book of wise conduct in life. It teaches us how to win trustworthy friends, how to overcome difficulties, how to deal with foes, and above all, how to live in peace and harmony. In short, the book answers the age-old Socratic question – how to live happily? It is high time that we read it not merely as a child fable but as a book with a moral and philosophical message for grown-ups. Perhaps, it was this ability of Vishnu Sharma's text to teach the complex notions of life through stories that fascinated the readers and translators across the globe.

Building a bridge between cultures through translation is an ongoing process. It needs to be nurtured constantly. The world needs good poets, story-tellers, healers, and translators. Gone are the days when a translator lacked respectability and visibility and was often seen as the poor cousin of the author. On the one hand, there are several texts written in Sanskrit and other modern Indian languages, which are yet to be translated into English for the readers worldwide. On the other, there are books on history, politics, science, arts, and culture written mainly in English, which are still not available for non-English readers. Translation can play not only a significant role in the cultural exchange and production of knowledge but it can also help us overcome the recent crisis in the humanities. It is the ethical obligation of social science and literature departments across India to make these books available in Indian languages as well as in English for common readers and students.

The proposed Indian Institute of Translation and Interpretation (IITI) in the Draft National Education Policy 2019 is the need of the hour. Its stated objective is to carry out 'high-quality translations' between various Indian languages as well between foreign languages and Indian languages. The Institute will have the mammoth task of strengthening and carrying forward the commendable job being done by the Sahitya Akademi and the National Translation Mission in the field of translation for years.

Translation in contemporary times is that sanjeevani booti, which would not let our sense of shared humanity die and continuously rejuvenate us intellectually, emotionally and spiritually. We will always need a Premchand who would translate Tolstoy into Hindi, and a Gandhi who would translate Tukaram into English.

NOTE : A slightly different version of this article was published first in The Hindu on September 28, 2019 to commemorate the International Translation Day. The article was entitled "The travels of Damanaka and Karataka: How translation builds bridges between cultures".

~ Dr. Lalit Kumar
Assitant Professor
Department of English
Deen Dayal Upadhyaya College

वैदिक बनाम आधुनिक

भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में काफी लंबे समय तक आइज़क न्यूटन का वर्चस्व बना रहा। लेकिन 26 सितंबर,1905 को अल्बर्ट आइंस्टीन द्वारा छपे एक शोध पत्र ने उन्हें अब तक का सबसे महान भौतिक वैज्ञानिक बना दिया।

इस पत्र में उन्होंने सापेक्षता का विशेष सिद्धांत प्रतिपादित किया। इस सिद्धांत के अनुसार समय और स्पेस एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और ब्रह्मांड में समय की गति हर जगह अलग-अलग है। आइंस्टीन के अनुसार समय धीमा हो जाता है, जब हम प्रकाश की गति से यात्रा करते हैं । इसके अनुसार हम समय में आगे जा सकते हैं, यदि हम प्रकाश की गति से तेज चलें I यह सोच न्युटन की उस सोच से काफी अलग थी जिसके अनुसार समय और स्पेस इस पूरे ब्रह्मांड में सभी के लिए एक थे ।

समय और स्पेस की यही अवधारणा आधुनिक भौतिकी का आधार बनती है।

अलग-अलग लोकों (Frame of References) में समय का अलग होना हमारे विष्णु पुराण (अपौरूषेय) में भी मिलता है। विष्णु पुराण में श्री कृष्ण लीला में एक कथा का उल्लेख मिलता है जिसके अनुसार इक्ष्वाकु वंश के राजा मुचकुंद की वीरता की चर्चा स्वर्ग में भी होती थी। एक बार असुरों ने देवलोक पर आक्रमण कर दिया और देवताओं को पराजित करने लगे। तब देवराज इंद्र ने राजा मुचकुंद से सहायता मांगी। राजा मुचकुंद ने अपने बल और पराक्रम से असुरों को पराजित कर दिया देवराज इंद्र ने प्रसन्न होकर उन्हें वरदान मांगने के लिए कहा। राजा मुचकुंद ने कहा कि उनकी कोई इच्छा नहीं है बस उन्हें पृथ्वी लोक पर उनके घर जाने की आज्ञा दी जाए। तब देवराज इंद्र ने राजा मुचकुंद को ऐसी बात बताई जिससे वह काफी अधीर हो गए। देवराज इंद्र ने कहा कि पृथ्वी लोक पर आपकी कई पीढ़ियां बीत चुकी हैं। अब आपका वहां कोई नहीं है। स्वर्ग लोक में आपका एक साल गुजरा है लेकिन पृथ्वी पर एक युग बीत चुका है। यह बात सुनकर राजा मुचकुंद काफी दुखी हुए, उन्होंने कहा देवराज इंद्र मुझे काफी थकान महसूस हो रही है कृपया मुझे सोने की आज्ञा दें और वह एक गुफा में जाकर आराम करने लगे।

अल्बर्ट आइंस्टीन की जीवनी पढ़ने पर मालूम पड़ता है कि वह भारतीय दर्शन,भारतीय धर्म ग्रंथ और भारतीय लोग जैसे महात्मा गांधी रविंद्र नाथ टैगोर मेघनाथ शाह आदि से काफी प्रभावित थे।

क्या अल्बर्ट आइंस्टीन द्वारा समय और स्पेस पर दिया गया सापेक्षता का विशेष सिद्धांत और हमारे पुराणों में उल्लेखित कहानियों का सार, दोनों का एक ही होना मात्र एक संयोग है या हमारे वैदिक कॉपीराइट का हनन यह शोध का विषय है।

~ हरीश चंद्र तिवारी एम. फिल.(भौतिकी)
तकनीकी सहायक
अभियंत्रिकी विभाग
दीनदयाल उपाध्याय कॉलेज

दिन

सुबह,
उठती है, अलसाई सी
धोती है मुंह हाथ
और घुस जाती है
रसोई घर में मेरे साथ।
बनाती है
चाय नाश्ता
नहाती है
ठूंसती है टिफिन में
कुछ खाद्य
और हड़बड़ाहट में
आफिस को निकल जाती है।
दोपहर—
लंच—वंच
प्रपंच
कामधाम टंच।
सांय—
मन भारी
तन भारी
सिर भांय भांय।
रात—
फिर वही तवा
फिर वही परात
फिर वही बिछौना
फिर वही खाट।

परिवार

हरा भरा पेड़
दिया सुबह जब दिखाई
ऐसा लगा
'मायके' पे
मिलने आया भाई।
सूबह—सुबह
उतरी
अंगना में एक मैना
ऐसा लगा
मिलने आई
जैसे छोटी बहिना।
अंगना मैं उतरा
जब धूप का उजास
ऐसा लगा
बाबुल ने
शीश धरा हाथ।
सबुह—सबुह
आई जब
महकती
बहार
'मैया' आई
पहुंच गया पूरा परिवार।

सब्जी मण्डी

शोर शराबा
तीखे स्वर हैं
सब्जी मण्डी।
तेरा घर
और मेरा घर है
सब्जी मण्डी।
चीख—चीख
सब बेच
रहे हैं
अपना होना
मैं, मैं, तू, तू, से
है घर का कोना कोना कोना
राकज रोज
जाता भर भर है
सब्जी मण्डी।
सुने कौन
सब कहते भर हैं
सब्जी मण्डी।

चले चलो

चलते जाना
कभी न रूकना ही जीवन है
आपखों में
एक शुचि सा सपना ही जीवन है।
चले चलो
पर सकल सृष्टि को लिए चलो
तुम समष्टि हो
संग समष्टि को लिए चलो।
सब जड़ चेतन लेकर
अपने साथ चलो
विश्व मुक्ति के लेकर
सपने साथ चलो।

~ Dr. Charu Kalra
Assistant Professor
Department of Botany
Deen Dayal Upadhyaya College

आओ खुशियां ढूंढ़े

करके गीली, कर से सौंधी मिट्टी गूंथे,
आओ खुशियां ढूंढे।
छज्जे पर वही घोसला तिनके वाला फिर से बुनदे,
आओ खुशियां ढूंढे।
दीवारों पर मनगढ़ंत आकृतियां गढकर खुद का घर खोजें,
आओ खुशियां ढूंढे।
छोटी-छोटी बातों पर मां से लड़ कर खुद से रूठे,
आओ खुशियां ढूंढें।
खिली धूप में घर की छत पर लेटे रहे आंखें मूदें,
आओ खुशियां ढूंढें।

~ Harish Tiwari
Lab Assistant
Department of Electonics
Deen Dayal Upadhyaya College

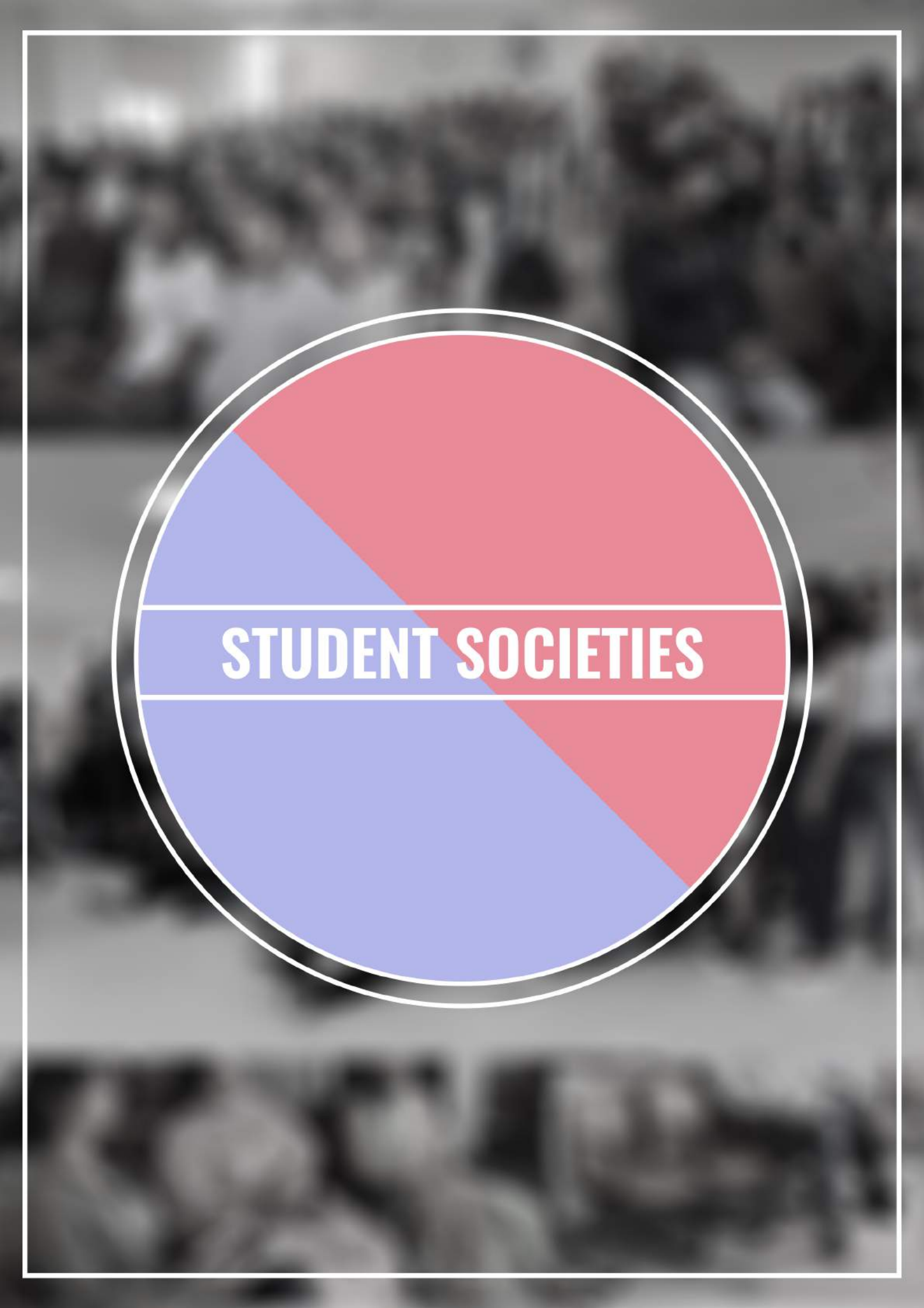
STUDENT SOCIETIES

VIVEKANAND STUDY CIRCLE

SPORTS CLUB

SPIC MACAY

SPIC MACAY
VIRASAT'20
DEEN DAYAL UPADHYAYA COLLEGE CHAPTER
PT. MITHILESH KUMAR JHA
VIDUSHI SUNANDA SHARMA
USTAD ZAMIR AHMED KHAN
26th February 2020 | DDU College Auditorium | 1:00 PM
takshila

SPIC MACAY DDUC chapter invites
you to their annual event
VIRASAT-2020
FEBRUARY 25th
1 PM onwards
Room No. 015
FEBRUARY 26th
1 PM onwards
Auditorium
Kindly come and grace the festival with
your presence.
Regards
Spic Macay
DDUC Chapter

ROBOTICS CLUB

VYOMA - THE ASTRO CLUB

ECO CLUB

ENTREPRENEURSHIP DEVELOPMENT CELL

EQUAL OPPORTUNITY CELL

FIN-S - THE FINANCE SOCIETY

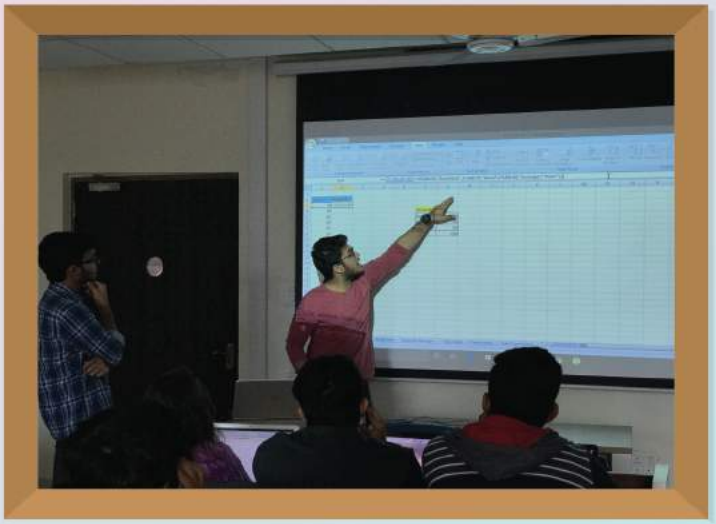

KALAMKAAR -THE LITERRACY SOCIETY

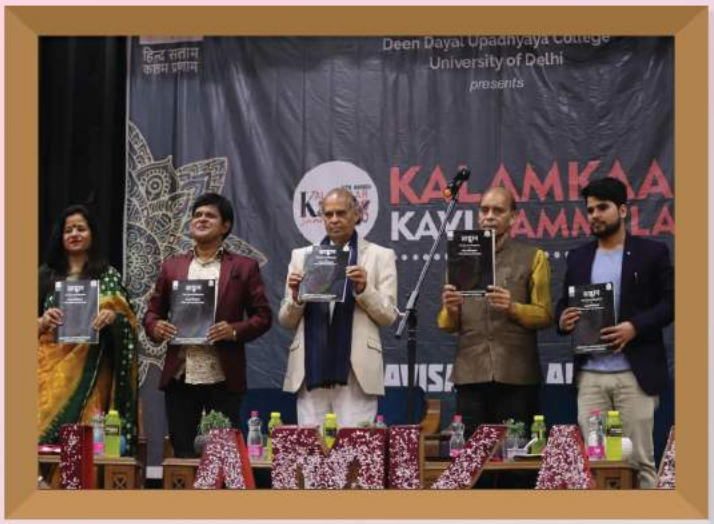

NATIONAL SERVICE SCHEME

POLAROID -THE PHOTOGRAPHY SOCIETY

RAAGA - THE DANCE SOCIETY

RHAPSODY - THE MUSIC SOCIETY

DEBATING SOCIETY

CAREER ASPIRANTS CLUB

WOMEN DEVELOPMENT CELL

YAVANIKA - THE THEATRE SOCIETY

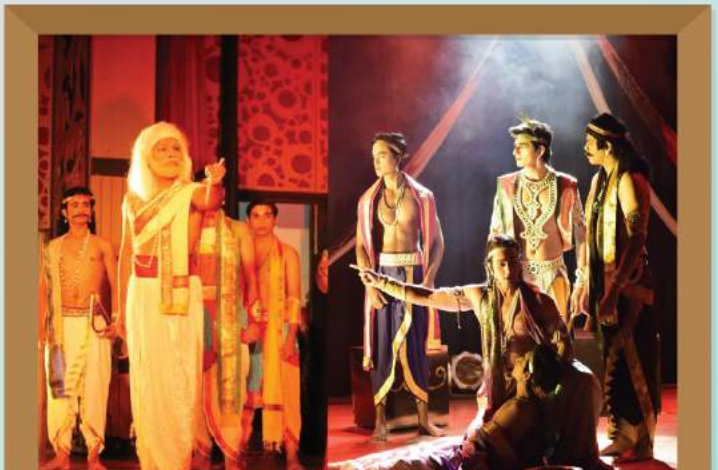

Creative Writing Part - 1

Abandoned

I walk in
Each footstep is what I hear
Every other sound seems to disappear
into the taps
I try to bury down my loneliness into those footsteps
I want to scream
A scream that has been haunting my belly
like a ghost in an abandoned house
A ghost in an abandoned body like mine
So
I laugh
I jest but it feels as if none of it helps
to set that scream to silence every time I walk home
It feels as if there's a wildfire
And I'm pretending they are candles
And my laughs?
They are trying to blow the fire down
The words unsaid I've been collecting inside,
like dried leaves of maple,
are the reason why it feels so heavy inside
Yet disappears when I look into
Because I'm empty
I'm abandoned
Just like a home left abandoned
A home like my body left abandoned
My spirit hangs to my throat
because now it's afraid to fall down
and I hold my tears in my hands like berries
Sweet, succulent but crushed
Berries young and fathomed
When I sleep
I hear my heart knocking on my ear drums
Whispering names that left me
Like a home
A home like my body left abandoned

Every morning
my dreams fall down on the floor
when I climb out of the bed
I feel like I'm at a bonfire
But there's nobody but me
I started hanging up phones
before they can actually say Goodbye
Goodbye was the scariest word to me
Hello has started being scarier
It feels like nothing is left in me
I jump and tremble at the slightest sounds
The inside now groans
The groan now echoes
But I recall, it's a home where nobody lives
Like a home that is abandoned
Home like my body
Left abandoned.

~ Ishita Bajaj
B.A. English (H)
2nd Year

The Spoilt Parchment

Why should my pen be a slave to your wish?
You rule? I don't like it. Let's get it abolished.
If the feelings are mine, the words will be mine too,
I would rather keep it private, no need of your ballyhoo.
Why are you so concerned with 'what I write'?
Are you scared? Scared of being exposed, I might
Say, what if my pen goes on to write about how ruthlessly you touched me?

What if it tells the tale of how you didn't let me be free?
So, you are afraid of its power now,
So, you are afraid of the dark tales that I kept secret somehow,
They won't be out of my mouth ever, for you are my father,
But what if my soul refuses? To keep this pain inside, to be the victim,
What if the ink spills onto this Parchment and reaches my skin?
Won't that be hurtful? Won't that be insulting?
The time you'll see the scars and the wounds melting.

~ Gracy Yadav
B.A. English (H)
2nd Year

Read it, until my words come to a rest . I don't have enough time to write about it as The Reaper is chasing me like an unsatisfied greedy harlot.

O heavenly fountain
filled to the brim with indigo ink
bless thy child
to bleed quaintly on this
caucasian battlefield.

Provide me with the strength to dance
a little longer amongst these
roaring vowels and hymning consonants.

O dead wisdom of Earth
enrich me with the pagan tales
buried deep within thy heart.

O hailing winds
sing me shrieks and screams
of blacks and Jews , humans and
humans.

O ye sour mead
pour me all your excitement
and silence and
row this letter to the shore
where two seas greet.

O ye with Halo ,
What are you staring at?
I understand your concern.
My creation would be better than yours.

~ Shreesh Sharma
B.A. English (H)
2nd Year

It's okay to not be okay

It's okay to fall down,
If it makes your feelings flow.
It's okay to cry in the dark night,
If your inner soul and mind are in a constant fight.
It's okay to kick and scream,
If it helps you fall asleep.
It's okay to creep into the dark despite no ray,
If it enables you to find your own way.
It's okay to get your feelings hurt,
If it helps you become strong and inert.
It's okay to choose the road not taken,
If it leads to a life more enlightened and awaken.
It's okay to be an effigy in the dark,
If, one day, it makes you an unflinching spark.
It's okay to not be okay all the time,
If it corrodes and helps you shine.

~ Nishant Sharma
B.Sc. Mathematical Sci.
2nd Year

Beauty

When she looks into the mirror,
It's not her lovely eyes she sees.
But her scars which they had pointed out,
The scars over which she will cry, now.
Every time they call her ugly,
Her fragile heart breaks into pieces .
She pretends to be ignorant of it all,
But inside, she is broken beyond repair.
Secretly, she wishes to be the one,
The beauty goddess they seem to worship.
Every day, she would try a bit harder.
Though again, they'll show her a new flaw.
The fake smile she has put on for long,
How badly she misses her real one.
Somehow, they have made her believe,
Beauty is everything she's not.

~ Ankita Rawat
B.Sc. (H) Computer Sci.
1st Year

Carnage

Building a realm of terror,
blowing the soldiers' bodies asunder.
The terrorists are finding their way,
seeing you busy hitting the hay.
They are pusillanimous of no one,
for them killing people is so much fun.
Attack on humanity is nothing new,
the terrorist groups are not just few.
Nothing to do with religion or fate,
they are just satan incarnate.
"I'll come home soon"-the soldier said,
the devil shot him right in the head.
The child had waited for his father,
to see him dead was much harder.
The mother had prayed for her son,
the terrorist aimed the cruel gun.
They went to church for wishes to reap,
but could come back only in their sleep.
The schoolchildren could not be saved,
in the school their bodies laid.
The 9/11 in two zero zero one
shows feelings in terrorists are none.
The four planes that were hijacked,
in world trade centre had two of them whacked.
People killed were three thousand;
For terrorists killing is a lovely trend.
The 26/11 in two zero zero eight
with AK-47, RDX, IED and grenade.
Carried by Lashkar, Lakhvi and Rehman-
their acts were no less than that of 'Shaitaan'.
All the victims who lost their lives,
the widows that were once the wives.
Pulwama attack in two zero one nine
had left the country in a state of whine.
For the attack, Jaish-e-Mohammed was responsible,
the devils had killed forty army personnel.
The Indian Forces killed two terrorists and two supporters,
meanwhile ensuing manhunt for the perpetrators.
The virus is wiping the earth,
the supporters are not in dearth.
The monsters are need to be killed,
with hate and rage their hearts are filled.
The time has come to save our homes,
for the soul of martyrs still roams.

~ Yogankshi
B.Sc. (H) Mathematics
1st Year

Men and Women must be like a Square

Everyone on this earth is god's creation ,
But we still have an element of discrimination.
Although India is world's largest democracy,
But do women have equal literacy ?
Spoilt are the girls who come late at night ,
We for sure need to change this insight.
Every morning we open the newspaper
and see the cases of rape ,
Surprisingly culprits easily escape .
Bleeding for five days is a womanhood stamp ,
But does anyone know the amount of pain
of that unbearable cramp .
Feminism is not just honouring them on
March 8 (woman's day)
True empowerment is when women are
actually liberated .
Be it men or women
All would go to the same heaven
And thus equal rights are god given.

~ Aarushi Sachdeva
B.Com. (H)
1st Year

The Daughter

The stars could see her fate,
the moon knew the satan incarnate.
Hidden in the darkness of their caves,
she could not recognise those knaves.
The scoundrels had leapt upon her,
the growlings made her scream blur.
The pain that her body got-
till her last breath had she fought.

Her soul had been killed and her body charred,
the humanity's face had been scarred.
The family lost their brave daughter
to the perpetrator's heinous torture.
The culprits need to be hanged,
What if next time 'your' doors are banged?

~ Yogankshi
B.Sc. (H) Mathematics
1st Year

In-Human

We slither about, our faces bearing the grotesque caricature of a smile
Death is a burlesque comedy, while
We're lying
Like footnotes to bad poems
Like footmats to sad ruins.

Somedays we're trying to be bigger than our hatred and slur
Constantly learning unlearning
But in the quiet of the night,
we're desperately scrubbing our hands. We've got innocent blood on them.
The hands bondage to us, suffer.

And our screams
Are muffled by the sound of our canons
The war is raging in my name while I crouch in the corner of my bed trying to sleep before they
Come for me too,
The underside of my eyes is burning with a stampede of my dreams
They are running off the edge in suicide
Until some men decide
"It's okay", they tell me.
"It's okay", I lie to myself with glee.

We're the leeches too
Constantly sucking and spitting

We soar like birds, spread like flu
But we have gotten no better than vultures
Lethal to our cultures
We eat our own children.
We eat their hands, we gauge out their brains and then we feast on their hope
There are days when we wake up in sweat, they say you are never really sleeping if you have sinned
Ah, we're already hanging by the rope.

So we cry and scream and debate
But we are too petty.
Some of us fight for food, we fight for loot.
And lure them into love, to twist their necks, bye pretty.
Only we are capable of extraordinary, that is why we are.
Extraordinarily inhuman.

~ Amrisha Rai
B.A. English (H)
2nd Year

No one can feel the pain she felt,
The heart of those Monsters still didn't melt.
Her body was burnt brutally in fire
A hot topic aroused for the digital liar.
'Hey i got the idea of new post!',one sigh!
A single drop of tear wasn't visible in his eye.

She was raped once, now she is getting raped daily.
The YouTube page is now telling me a different story.
My Instagram stories tell me to like the post
To help rest in peace, her soul.
WhatsApp messages are flooded with links:
To subscribe and support her to get justice.
Candle marches are organized amongst wails,
Still the purpose every time fails!

Curse me god for I am a helpless lady!
My sister is being forwarded daily.
Yet i am unable to stop this disaster
Though her body was burnt, let her soul live freely after.
She is not demanding to go viral,
If you have guts, put the rapist into fire.

P.S. My hands are demanding for a gun
To do what should have been done.

~ Rashi Pandey
B.Sc. Physical Sci. C.S.
1st Year

Contrast

Ever had that feeling?

When you just want to sulk in a corner

The world around is merry and bright

When everything seems to go right

You think you don't deserve this.

You are supposed to be sad?

Ever had that feeling?

When you just want to smile your biggest smile

The world around is dark and melancholic

When everything seems to go wrong

You think you don't deserve this.

You are supposed to be happy?

Ever had that feeling?

When you want to know what it is like to die

But really, you just can't stop being alive

How you garner just enough courage to think of suicide

But not enough to pull the trigger.

Ah the contrast!

You think of heaven and end up at the bottom of hell.

~ Ansit Kaushal
B.M.S
3rd Year

I Am The Girl

I am the girl..
I'm the bird, who just wants to fly in clear sky
I'm the squirrel, who loves to squeak in green
I'm the girl, broken but strong enough to fight again
I'm the star, who also shines as others do
I'm the mountain, which dreams to touch the zenith
I'm the girl, who has dreams screaming inside her
I'm the river, who knows how to make its own way
I'm the flower, dancing freely with flirtatious breeze like no one cares
I'm the girl, my own kind of beautiful and perfect
I'm the book, the bestseller of my own world
I'm the map, not everybody can read which
I'm the girl, not here to be judged by my colour
I'm the truth, bitter to many but sweetest to me
I'm the song, having symphony of love and bliss
I'm the girl, who'll write her story on her own

~ Arshita Gupta
B.Com. (H)
2nd Year

Shattered

Stop, said the mind,
But how do I stop myself from rowing in this
endless ocean of salty memories
dripping from my eyelids like precious honey from
a beehive.

Escape, whispered the angel,
But how do I escape from this cage
That's now engulfing
my once free heart ,
guarded by the devils of past.

It hurts, whimper my ears,
Habitual to the melodious beating of two hearts
synced to a rhythm,
now unable to bear the pain from the beating of an
empty vessel
against the shallows of a cage.

Run away, shouted my subconscious,
But how do I run from the pain
when the road I have been travelling upon is
nothing
but an endless loop of black and white with little
specs of grey in it.

Don't go,
The hollow words which now rest at the tip of my
tongue
tasting like the bitter medicine I'm unable to
swallow.
I wish that these words could have reached their
rightful owner
but my being feels right for I don't regret letting go
of someone not worth my time.

Hope fills each and every cell of my body ,
Because I know that a heart never breaks,

In this game of hide and seek there's always a chance
for escape...

~ Sakshi Goel
B.M.S
2nd Year

Hope

Finally I can smell the air,
Its minty aroma indicating me of my escape
The warmth from the flowery bed,
Its tendrils coiling around me in an
embrace
Coaxing me to move forward

Leaving the harsh and blustering winters
behind and,
accepting the blissful warmth from the
invigorating season of blossoms
healing the shallowness of my heart with
its heavenly rhyme.

Even though restricted with insecurities
my heart now smiles
Knowing there is hope in every drop
falling from the monsoon sky.

The grey ceiling above our heads
now feels like a comfortable change from
the darkness within my soul
the heavenly breeze now feels like a dose of
anesthesia to my heart.

Walking alone in the muddy paths of life
A jolt of electricity awakens my soul from
its endless slumber,
a pair of lush green orbs filled with the
promise of tomorrow,
hiding the broken pieces of yesterday
clashes through me to a place far beyond
where there are no walls and no chains
only a layer of heavenly peace and
the music of birds singing in the rain.

~ Sakshi Goel
B.M.S
2nd Year

Promise

Finally I can see
a knight in shining armour
Standing just below the balcony of hopes
In my ivory tower
His alluring green irises enchanting my heart to a new melody.

He carries a sword,
embedded with beads of power and passion.
With each step that he takes forward
my defence rises

But he is determined to prove his worth
With a body of steel and an armour of gold
He fights all my demons and dances through the fires of past
He gives my soldiers of insecurity a checkmate.
And liberates me from my tower of isolation
With a promise of protection

Instead of a tower he envelopes me in a bubble of soothing peace.
Reminding me to view the world in its transparency and purity.

But life is anything but a fairytale
My envisioned happily ever after
Was it really it?
Or is there something more ...

~ Sakshi Goel
B.M.S
2nd Year

Possession

Possession is a strong word
And an even stronger feeling
It engulfs me like a toad swallowing a fly
The bubble of protection
now just a claustrophobic mess
Taking me deep into the depths of Bermuda
His once awakening green orbs
now feel like poison Ivy

He keeps his promise of protection
by making me his possession
And all I can do is drown myself in the misery of debt
He chains me through his debt of my freedom

For he has done nothing wrong
In fulfilling his promises of passion and love
Now, sitting in the depths of my sorrow
A seed of rebellion has sown itself
Gradually building me to my release.
Enough, a piercing noise echoes through me
Bursting the bubble of ignorance
After a journey in this merry go round
It's time to break free from this
Endless cycle of dependency.

~ Sakshi Goel
B.M.S
2nd Year

Freedom

Another cocoon is going to burst
in these human forests of denseness
A naive caterpillar is going to free itself
From this unyielding torment
Because this is not my home
But just another pit of darkness
Every struggle and every piece of hatred
Is the engine to my flight and
All the colors on my wings
Are nothing but a badge of honor
Now, the dependency of my heart
Fades with each crack
Made in the hollow walls of promise

The poison of the worldly lies
Is finally replaced with the sweet nectar
of the innocent blossoms.
With the fuel of past and
The scope from future
I am ready to fly,
not high but

In the deepest shallows of the world
The only place which symbolizes
Growth
Freedom
Strength...

~ Sakshi Goel
B.M.S
2nd Year

Procelain

The Sun shines in vain
I see it gray
Waking up again from a dream
And to know which will never be a reality

Sky of desires
Full of vultures
They are waiting for another careless moving
So they can attack me like a defenseless little being

I'm afraid to leave the room
I'm afraid they'll get caught...

As porcelain dolls shattered on the floor
The morning light casts a shadow on the door
But this is not the glow I wanted
Not what I painted in my heart, not the glitter I need

Sky of desires
Full of vultures
They are waiting for another careless moving
So they can attack me like a defenseless little being
As porcelain dolls shattered on the floor
The morning light casts a shadow on the door
But this is not the glow I wanted
Not what I painted in my heart, not the glitter I need

~ Sahil Chauhan
B.Sc. (H) Electonics
2nd Year

Song

Oh hey! Oh hey!
Play that song again
The one they used to play
To its rhythms I would sway
As a child with braided hair
A little lost, without a care

Oh hey! Oh hey!
Play that song again
The one they used to play
To its rhythms I could sway
With its lyric I became
A soulful lover, a lonely dame

Oh hey! Oh hey!
There's that song again
The one I used to play
To its rhythms I would sway
But I left it at the bay
When my innocence swept away
When my dreams went astray
When my mind would often betray
When I got busy growing up each day.

Oh hey! Oh hey!
Where's that song again
The one I used to play
To its rhythms I did sway

Through my life it held my way
My blessing, my hopeful ray
Dear song don't go away.

Oh hey! Oh hey!
Find my song again
The one that I played
To its rhythms I once swayed
A little prayer that's gone away
Freed my soul once
Now ask it to carry me away
For my fading breath,
Some peace only it can lay.

~ Shailja Kaushik
B.A. English (H)
2nd Year

The Shooting Star

(In context to Uighur Muslims in China; a poem about the children of refugees)

I look at a light ray up above
trying to catch it with my scarred red hands
But it slips through my fingers sans warmth
Just like the people standing far away
Waiting to beat us, waiting to help us "learn";
waiting to get us all
My heart bleeds and my eyes rain
the sad yet well-woven tale of a hundred goodbyes;
without goodbyes
I yearn as I sleep beside two logs
Crying for the warmth of mama's hugs
I yearn for that morning sun
But alas! It is the morning moon that shines on me
Devoid of warmth, devoid of light
Devoid of a single ray from the hundred billion I
yearn for
Yet in the darkness there flashes a light
Bit by bit I grab it all; My mouth opens and my
hands stretch out
As through the broken wall to the empty sky, I see
the twinkle in mama's eyes (once more),
She falls down as a shooting star and makes me feel
loved
(just as I had last felt in what seems like a billion
years ago)
As that evening she was patting my hair, singing
"Lavender's blue"
"When will I meet you, mom?" I whisper to the
shooting star
As the sky above welled up with tears galore
"Wait for me my love" she whispers in silence
"Alright now tell me; how does it feel,
my love,
when a raindrop trickles down your face to say
hello?"
And finally, my day has come, starved of love, of
warmth; of everything
I shall go but alas! Who will cry? (not even me)
As sleep kisses, the tired eyes and a familiar voice
sings a distant lullaby
A black curtain starts pulling over
But I try to pull back! But slowly relax as I realise
All but the world will be sad without me.

~ Sneha R
B.A. English (H)
2nd Year

Take Me Places

You hold my hand tighter than anyone else
So tightly that it made me realise
That you were the little one who had the
expertise
To heal the battered and the broken me
The old me I thought I could never be
Before you came and took me in your fold
I used to cry and cry (as I wanted to die)
To escape from all of those fiends
All the pain, all the disappointments; painful
flashbacks
Forever so that I won't be sad ever again
Going with you (in the car) as you sit holding
my hands
I look outside as the trees pass by
A thousand memories with you come flashing
by
Each one, adding a sparkle to my otherwise
dim eyes,
Each one as pure as the dew drops in the sky
She takes me places; yes, she does
Into the world which can never be mine
But still gives me the portal to that world
Where that my heart unites with my mind
For once in my life.
I could see dew drops again not my tears
Those salty sad things that flow down my face
Seem non-existent when she comes by
Looks into my eyes and takes me in
Into the world full of her fantasies
Far away from the reality which butchers me
But how long will she be (with me)
Forever please; my heart yearns
But time is a magical thing
People fade away; but not memories
The golden memories just don't stop rushing
back in
Just as I let that butterfly(golden) fly away
With that salty thing in my eyes I felt I would
fade away
But a goodbye isn't the end as I carry with me
traces of her
As the butterfly keeps flying in the paradise
The paradise of my heart and the garden of my
soul
With the blooms, the beautiful.

~ Sneha R
B.A. English (H)
2nd Year

I am a woman,
And inside me is a forest.
Shrouded in mystery,
It is a place of wonder.
Wild and dangerous,
But full of adventures.
There lives a little girl,
Braiding ideas and stitching plans.
Weaving words into glorious tapestries,
Cooking in her mind,
Curious arguments and epiphanies.
Free from inhibitions,
Seeking no validation,
She strives with an unquenched thirst of knowledge.
With eyes like that of a gazelle,
Wandering in the woods,
Is my little rebel.
I am a woman,
Taken by the society.
A hostage to their expectations,
I suffocate everyday,
To let my little rebel breathe.

~ Eashani Sharma
B.A. English (H)
2nd Year

Someone left the office windows open today. In the evening when everyone had left, a little bird flew in gently and sat on the glistening window panes. This event was being recorded by the CCTV camera that was placed in that section. The bird stared at the mundane world, somewhat lost, without any hindrance caused by humans or, for that matter, the glass screen.

For a bird, it sat unusually still, glancing here and there only a couple of times. Time had been too hard on that insignificant creature. The tough situations that it had encountered over the past years, compelled it to live a life of terror. Humans had made survival difficult.

The tree branch it built its nest on, was ruthlessly sawed to build nests for humans. The unborn eggs that were awaiting life, were murdered before they could see this vast world. A catastrophe!

As if this wasn't enough, the other birds that had been migrating to that area were killed during the journey due to the inappropriate weather and toxicity levels of the atmosphere. The little bird waited and waited. It had been long before it realized that loneliness has crept and life now, will be nothing but misery and sorrows.

There was no place it could go and spend what's left of its life, peacefully. The little bird was officially devastated. It had no companions, no home, no food, no hope.

With a light body but heavy heart, the bird pecked its feathers and hopped once, before spreading its wings towards the poisoned sky.

These feelings and emotions were, however, not caught in the CCTV footage.

~ Kashish Bansal
B.A. Prog.
3rd Year

The Letter of Love

Darling,

We haven't been talking for a couple of weeks, our conversations have been mere nods and random hums at each other. We mostly haven't been acknowledging each other's existence since that day. I know I should have said something, but words wouldn't come out for two reasons – one, I'm afraid I'll say the wrong thing; and two, I don't know how to process your confession. I didn't know how to talk to you, so I'm writing you this, I hope you don't mind. I'm sorry I didn't notice your internal struggle over your identity for the past sixteen years. Now that the truth is out in the open, I remember all those days how you were frustrated about things and I would just brush them off because you were just going through puberty and so I knew these hormonal changes occurred. Maybe I should have been more careful, I should have looked a you like I really looked at you. I could only imagine whatever you were going through these years and as a mother, I should have done something. You have been in your bed mostly for the past few weeks and I have been near your door, hearing your soft sobs and even though I wanted to come inside and give you the tightest hug, I knew I could never understand your pain and I felt like I had to punish myself for my ignorant mind. Perhaps you will forgive me for being so stupid sometimes, I didn't know what to say that night so I just said, "It's all in your head, it isn't real - go to your room and stop thinking about it", and you fought back and we just started ignoring each other. I didn't want to lose you as my child and whatever you were doing scared me, and now I realize the only way that I won't lose you is if I accept you for who you were. You always wanted to play with my makeup since you were a baby and I let you because you were a child and you didn't know anything, but it frightened me when you said you wanted a make-up kit for your thirteenth birthday and not a PlayStation like all of your friends. I took you away from all those 'girly' things and made you play outside with your friends but you always found excuses to not go. When you came home last week wearing a Kurti and red lipstick and you smelled of jasmine flowers, it reminded me of all those men who dressed up as women in the movies. I was scared that you were out of your mind. Then you explained, "Mamma, I am a girl. I am not a boy. I want to marry a man and I want to wear makeup and I want to live and not feel guilty about it". I was shaking and I didn't know what to feel about it. You said you wanted me to call you Tanya and not Prakash anymore. It didn't make any sense, I named you that. You were my son for all these years but here you were, wanting to be something else.

I regret thinking that now. I can't stop thinking about how you kept everything inside and although I said that you could talk to me you didn't because I was clearly not a safe space for you which I can understand now. I have been reading about everything you said and even though I wouldn't know everything about it, I will listen. I will learn. Please give your Mamma time. I promise that you are not alone in this world. You are still the light of my life and you always will be no matter what. When you were born, I was so happy and glowing and your father kissed your forehead and said to me, "we will give him whatever he wants" ,and we will. I am sorry that I am taking so much time, I am sorry for hurting you and making you think that I am not accepting enough. I love you, you are my baby and you are my Tanya. I will always love you, so be yourself and don't let anyone tell you otherwise. Also, you need to wear a different shade of foundation, that is NOT your colour.

Love,

Mamma.

~ Meghna Ravi
B.A. English (H)
2nd Year

The sun rose with a golden glow, filtering through the mackerel clouds signaling the end of the reign of the dark-starless sky. Howling wind came thrashing through the boughs of treetops, agonizing their moans as they wobbled under its pressure. As the wind became more feral, a mystic winged creature which went by the name Peripas appeared gliding through the dissipating fog, shivering against the wind, reneging the dogma with its free soul. It alighted near the murky castle with a causeway that crossed the moat which was slick with moss and algae, painting it an eerie green.

It was believed that Iynx was imprisoned there in the metal ribs of inhibition, kept under the security of an old key keeper - who had a fringe of grey-white hair around his balding, mottled scalp. He made sure that the seed of hope and freedom of thought would never be implanted in the kingdom of misery and tyranny.
But, as Peripas alighted to the metal rib of Iynx, it witnessed the very appeal of Iynx - the light crimson shade of the skin, covered with porcelain feathers. And as the wind swayed the jet black hair on its forehead, Peripas could feel its heart throbbing. It wanted to set Iynx free of all the dogma but as it flapped towards it, it could feel the vividness of the trapping murky castle attracting to its cause, closing in on Peripas.

~ Porush Puri
B.M.S.
3rd Year

ART
GALLERY

PIYUSH YADAV

B.SC. PHY. SCI. CHEMISTRY 2ND YEAR

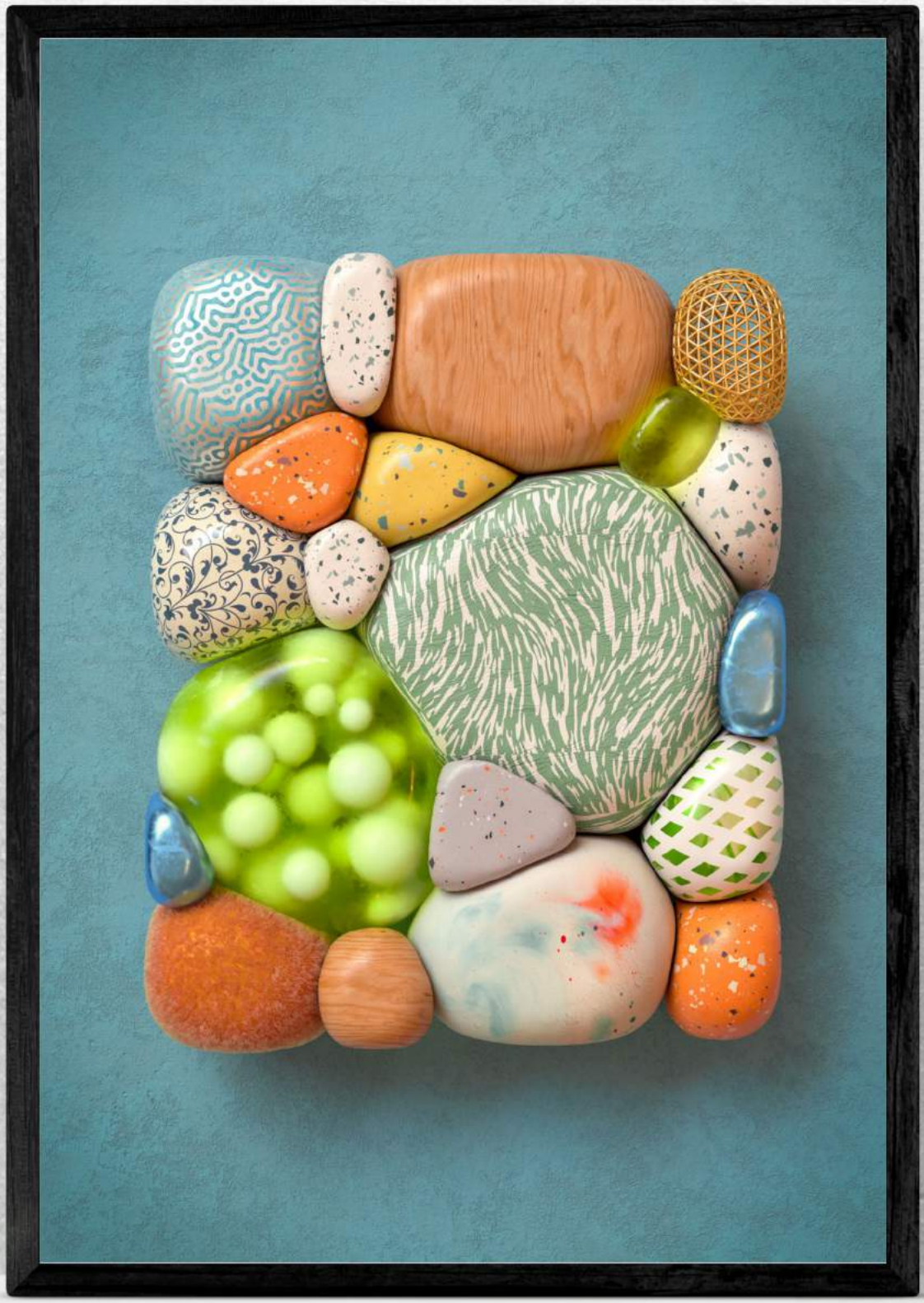

DIPANSHU

B.SC. (H) ELECTRONICS 2ND YEAR

PIYUSH YADAV

B.SC. PHY. SCI. CHEMISTRY 2ND YEAR

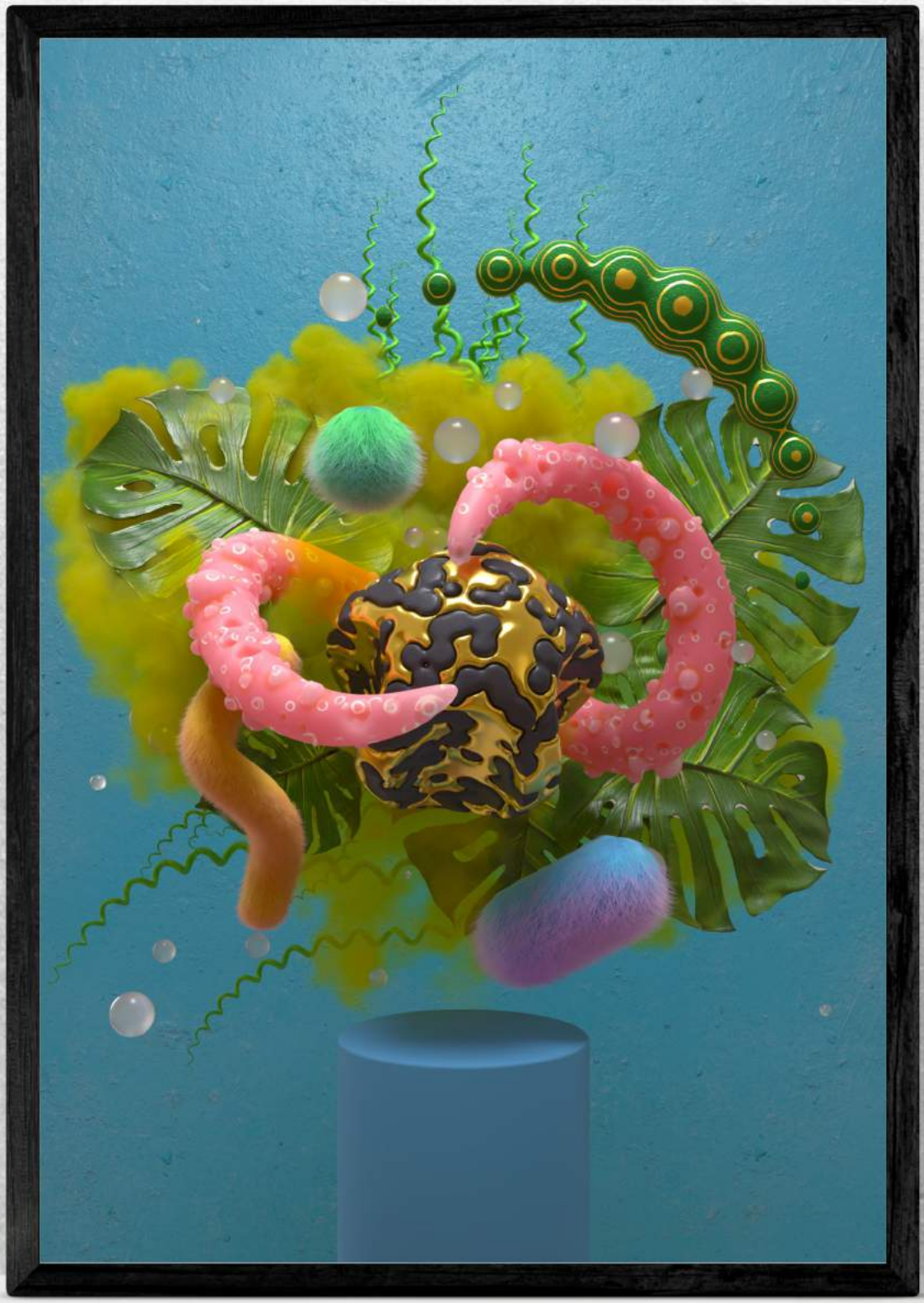

ALOK KUMAR

B.COM. (H) 1ST YEAR

SANYA BOUNTRA

B.COM. (H) 1ST YEAR

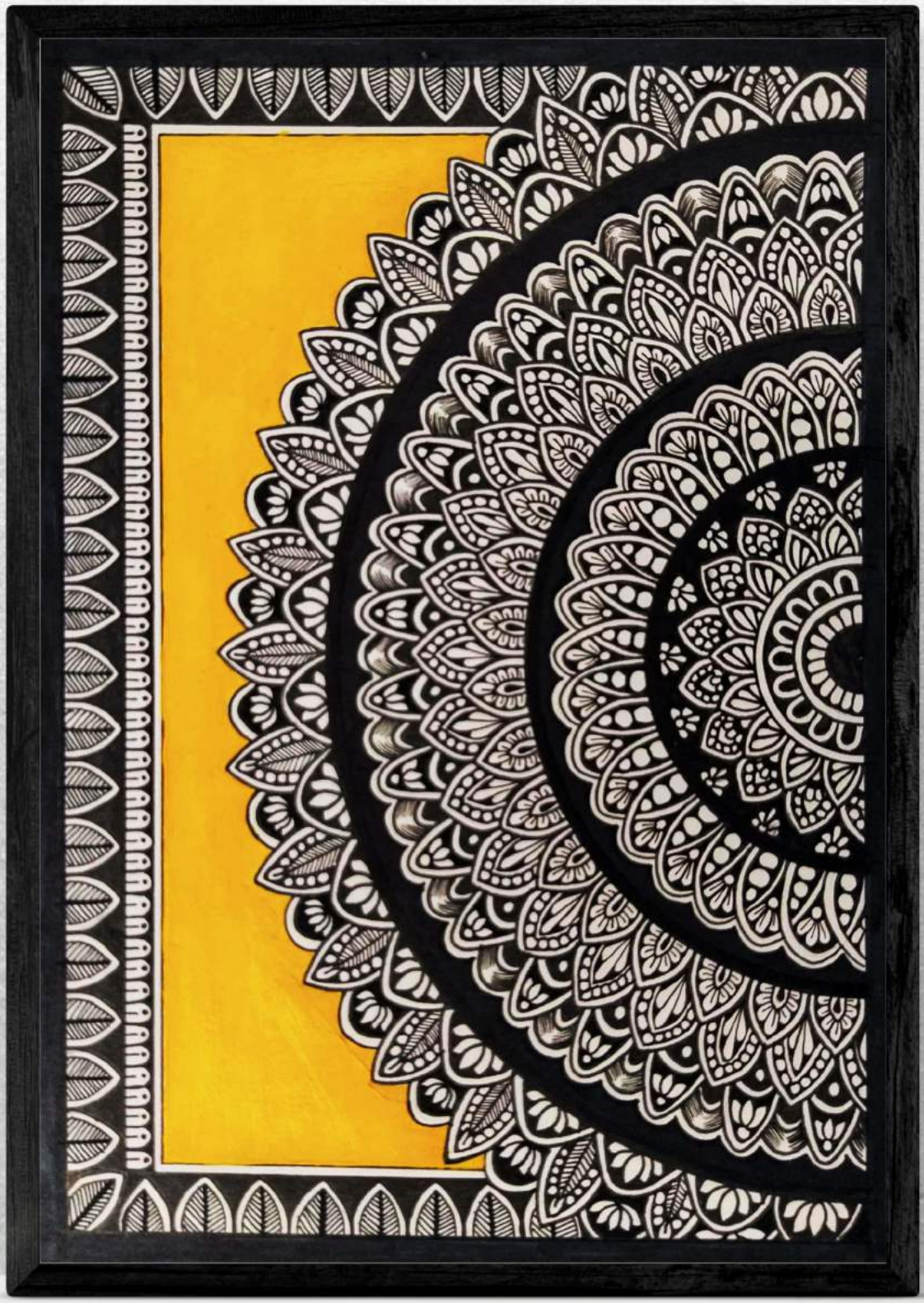

ALKA SINGH

B.A. (PROG) 3RD YEAR

SANYA BOUNTRA

B.COM. (H) 1ST YEAR

SAKSHAM JAMWAL

B.SC. (H) BOTANY 2ND YEAR

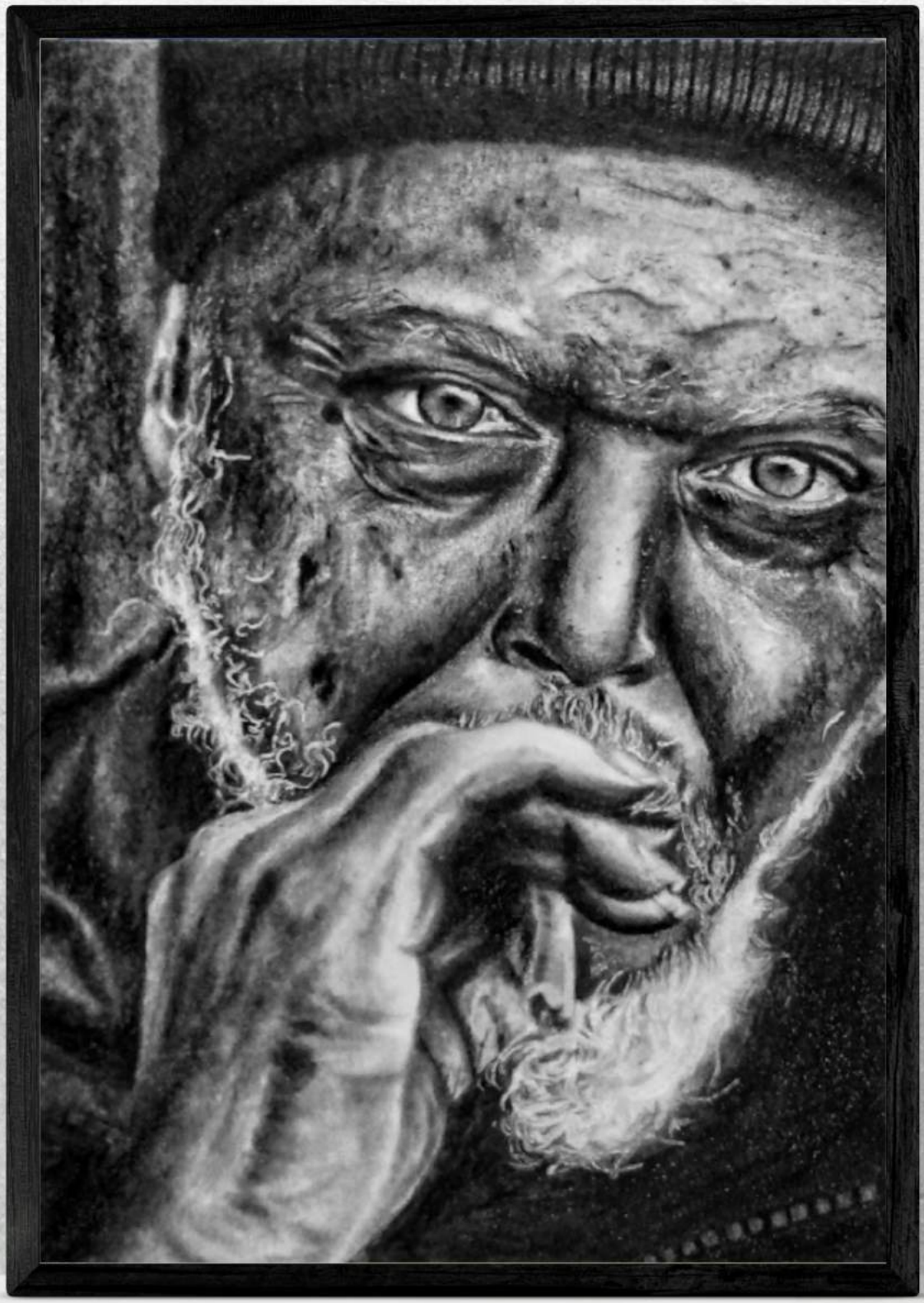

YASHIKA JINDAL

B.SC. (H) ZOOLOGY 1ST YEAR

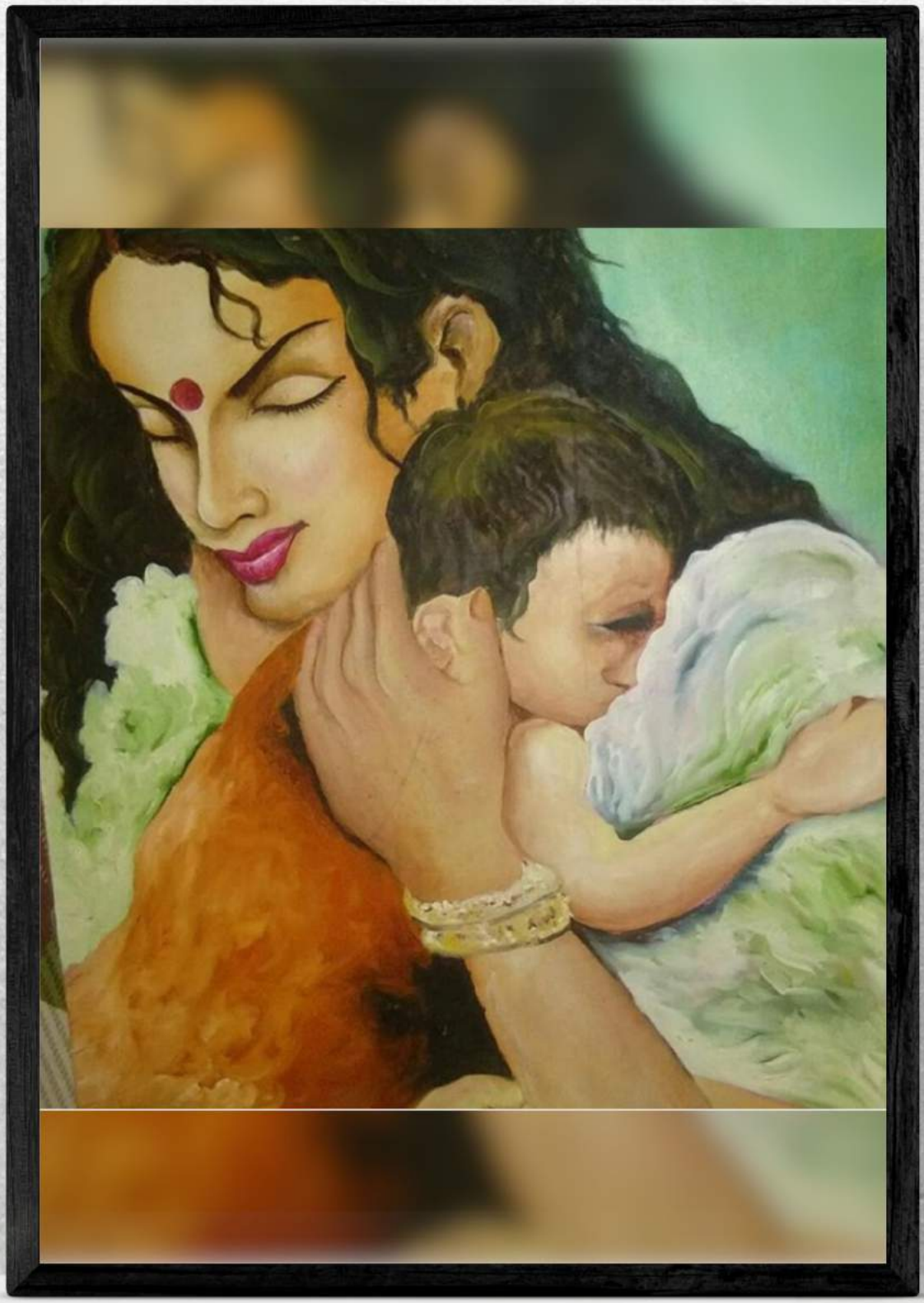

SAKSHAM JAMWAL

B.SC. (H) BOTANY 2ND YEAR

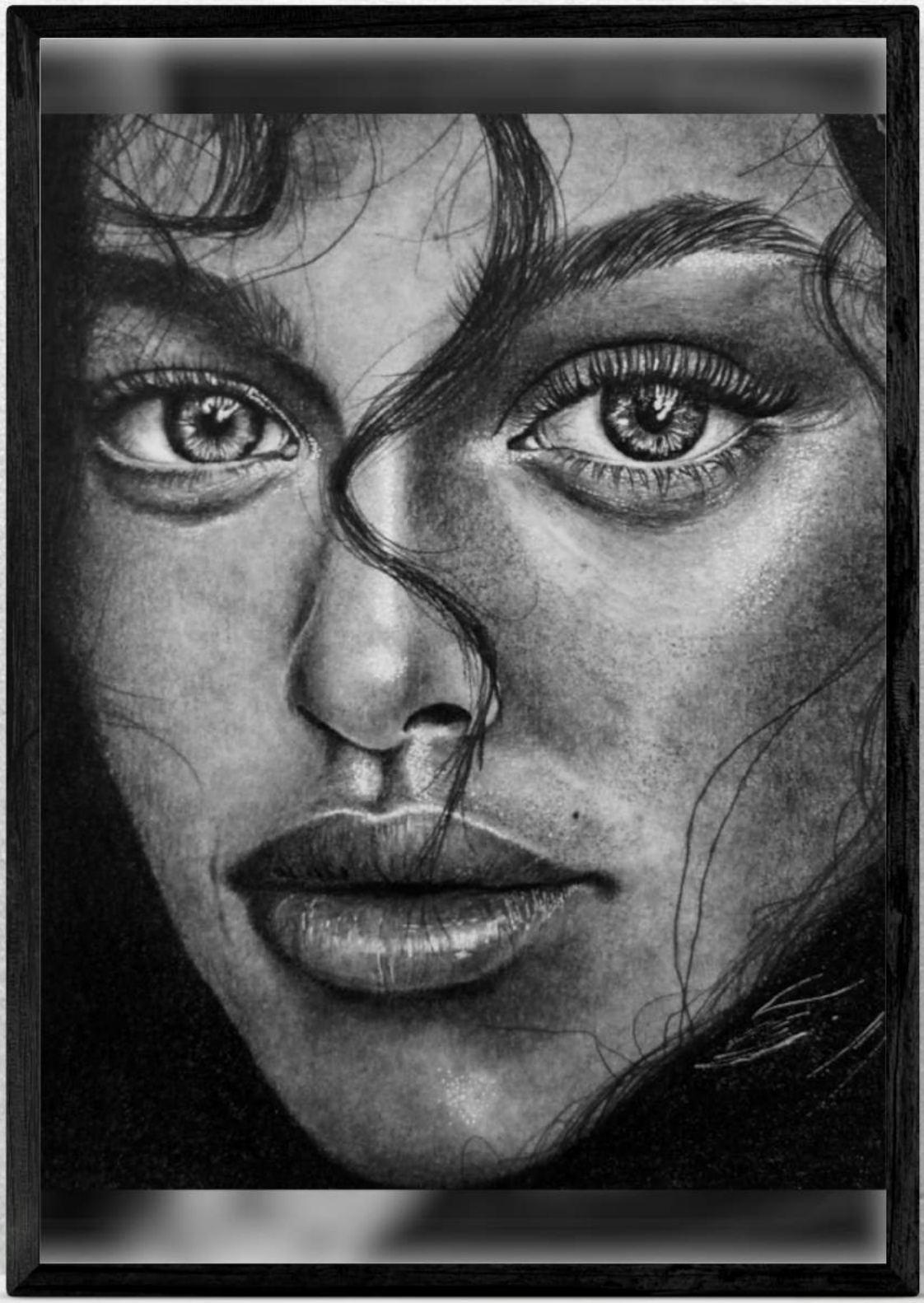

SAURABH YADAV

B.SC. (H) ELECTRONICS 1ST YEAR

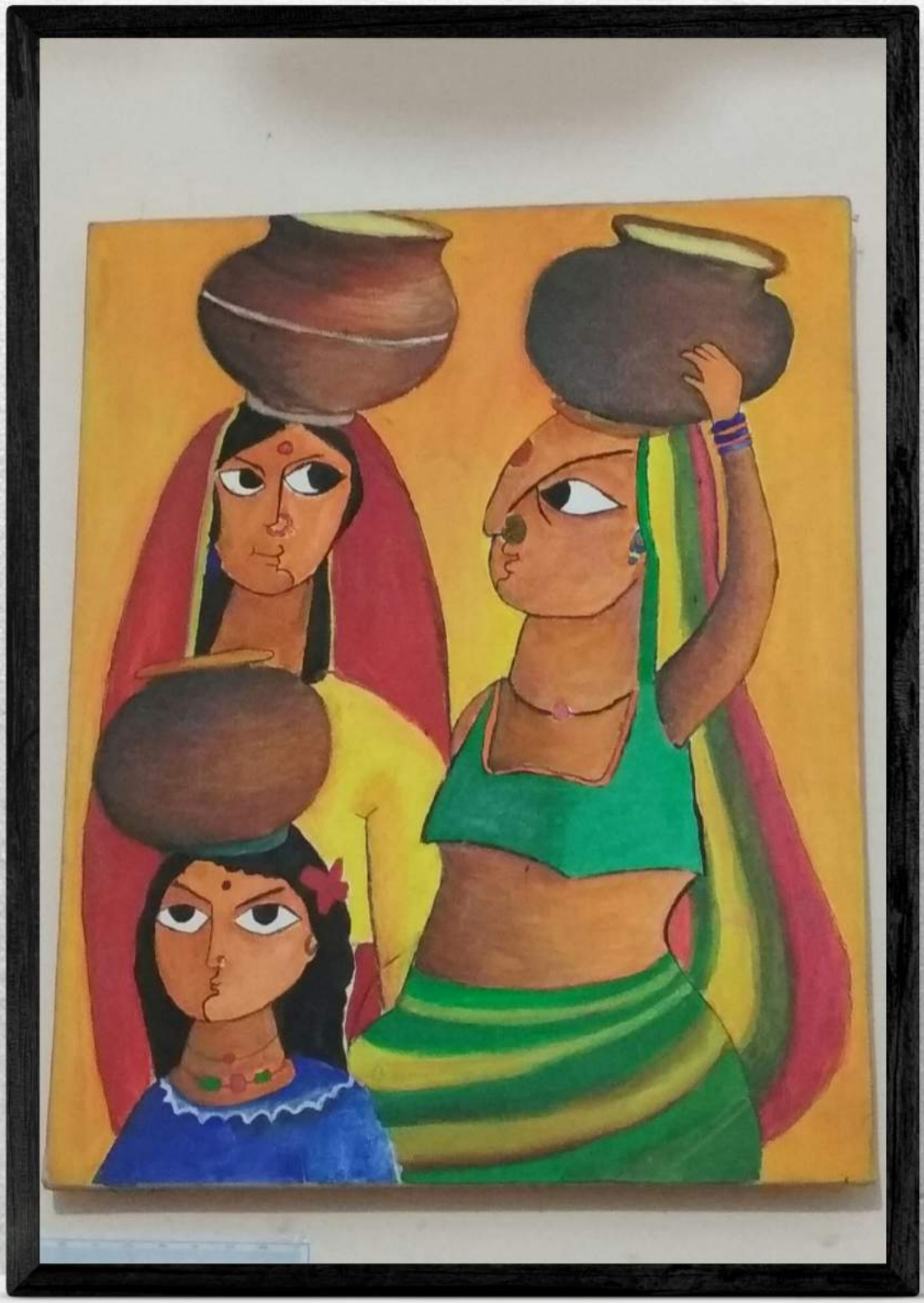

SAKSHAM JAMWAL

B.SC. (H) BOTANY 2ND YEAR

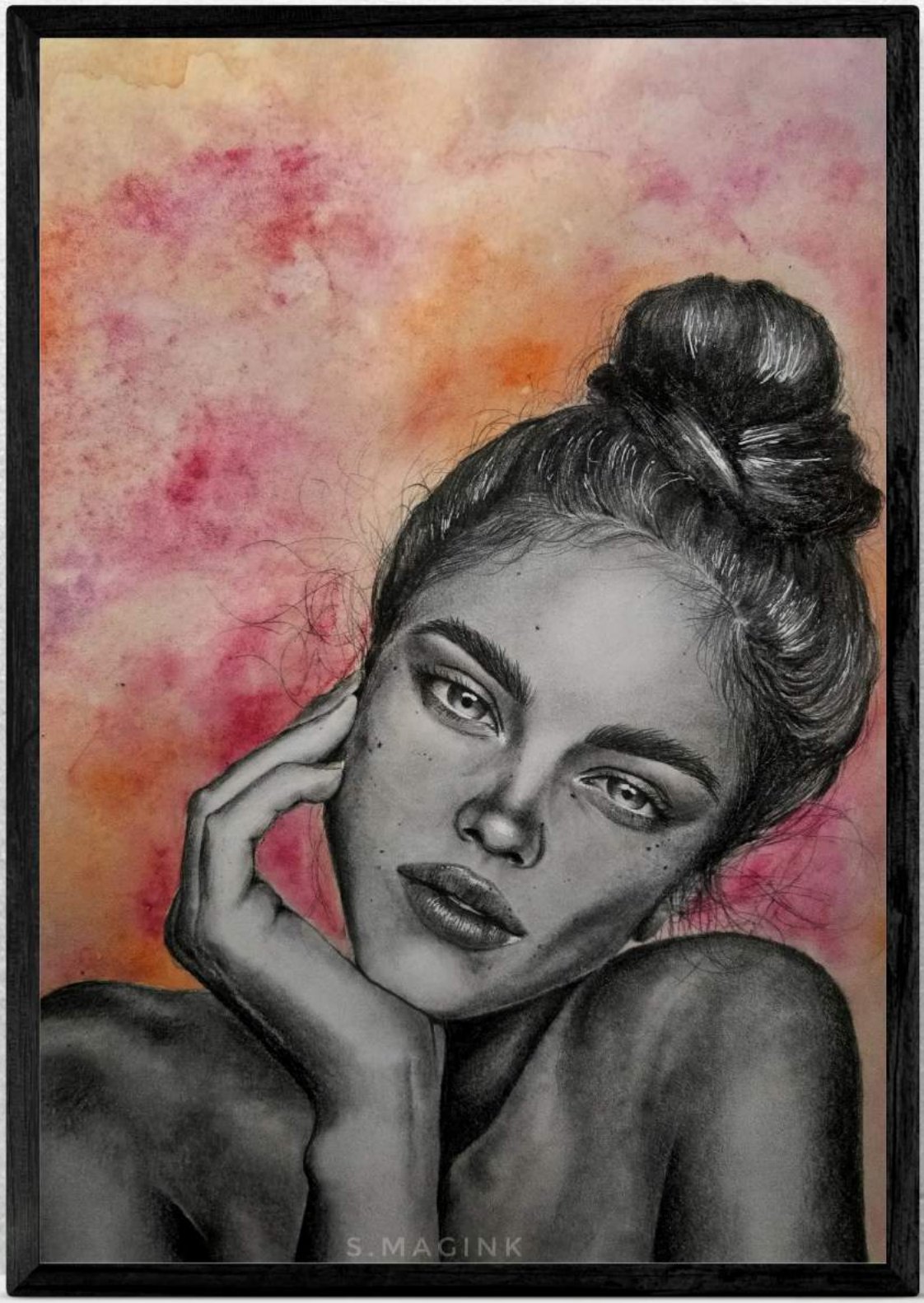

PULAK JAIN

B.A. ENGLISH (H) 3RD YEAR

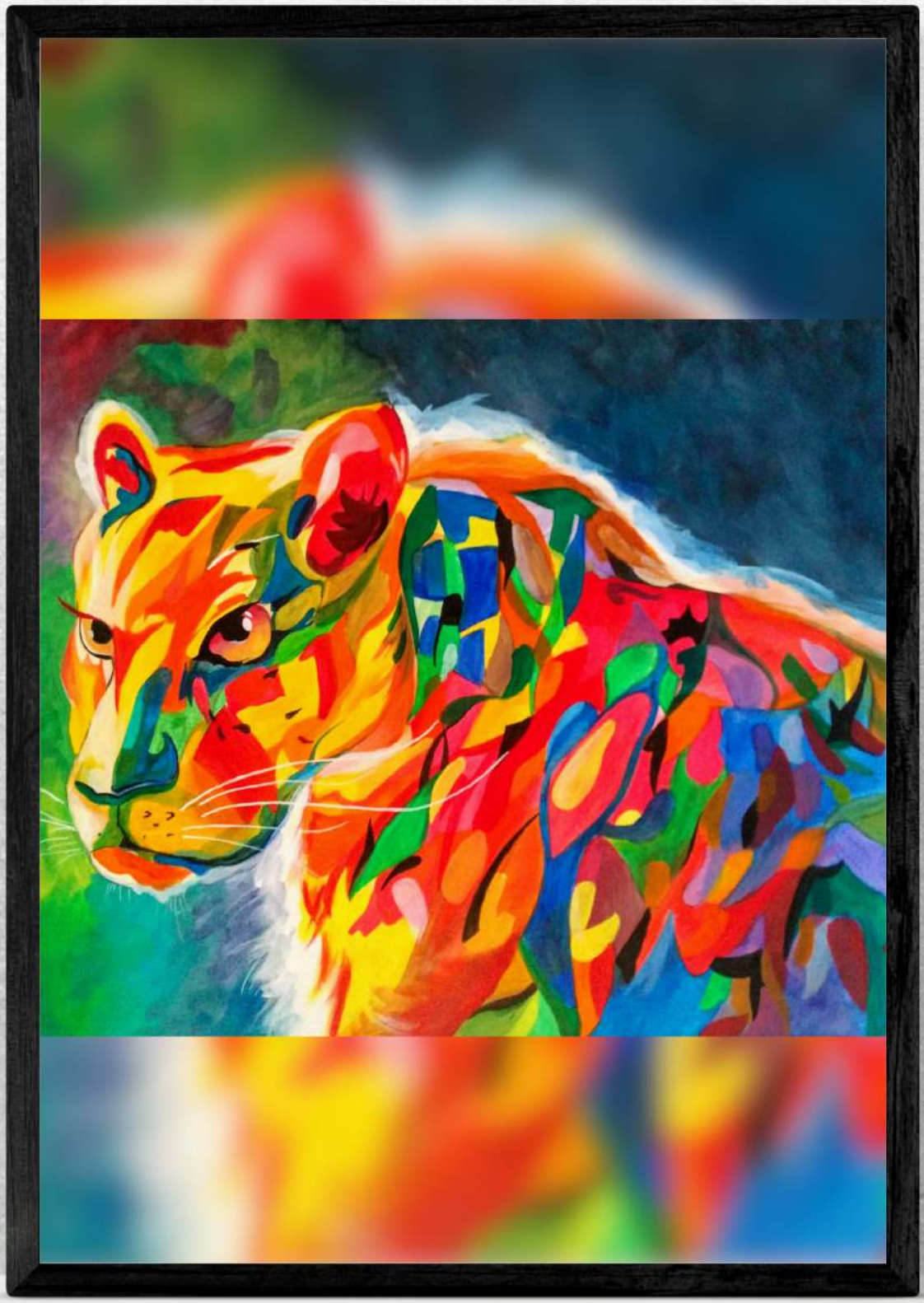

PULAK JAIN

B.A. ENGLISH (H) 3RD YEAR

ROHIT BENJWAL

B.SC (H) PHYSICS 2ND YEAR

रचनात्मक लेखन

भाग - २

माफ़ी की गुजारिश

हां हुई गलती हमसे जो
माफ़ी मांगकर उसके जवाब के
इंतज़ार मै था,
कम से कम उसकी चुप्पी का कारण
तो पूछना चाहिए ही था।

कोई बताये उसको कि
उसकी चुप्पी के कारण मन मै हज़ार
आये,
कही गुस्सा बाढ़ ना जाये इस डर से
कारण पूछ ही ना पाए।

इंतज़ार आज भी है,
डर आज भी है ,
हां हुई गलती हमसे है, पर आपसे माफ़ी कि गुजारिश भी है।

~ Shubham
B.Sc Physical Sci. CS
2nd Year

तुम्हारी याद आती है

वो मेरी रात का सूरज थी,
मैं उसकी सुबह का चाँद था
यानी हम थे तो वहीं, बस कभी दिखे नहीं
हम एक दूसरे पर नज़र मारते भी थे,
तो नज़र अंदाज़ होने
या नज़र अंदाज़ करने के लिए
इसी तरह हम ने कई मौसम साथ में काटे थे
उसकी तरफ़ से कुछ किरणें आकर
मुझे सुबह जगाने का काम करतीं थीं
और मेरे यहाँ से कुछ तारे
रोज़ रात उसे लोरियाँ सुनाकर सुलाया करते थे
हम दोनों ने कुछ बारिशें भी साथ में देखीं
पर अफ़सोस
कभी भी उनमे भीग जाने का मौका नहीं मिला
हाँ पर एक चीज़ थी
जो बारिश के रुकते ही हमें जोड़ दिया करती थी
वो इन्द्रधनुष,
जो मेरी खिड़की से निकलकर उसकी छत तक जाता था
और उसके कानों में चुपके से जाकर
कह देता था कि
सुनो - "तुम्हारी याद आती है"

~ Rishi Suri
B.Sc (H) Chemistry
2nd Year

हर सम्त लोग अपने ईमान की फ़िकर करेंगे
वो अपनी शदीद सुरमई आंखें जिधर करेंगे

पैदा नहीं रोटी अपनी आवाम ए वतन को
तख्त नशीं दूसरों को ज़मीं मयस्सर करेंगे

भीगी जुल्फें बिखरे ले रहीं हैं तपिश धूप की
आज मकीं बहिश्त के भी नज़रें इधर करेंगे

अगर फट पड़े अब्र मेरे सब्र ओ ज़ब्त के
न हिफ़ाज़त करेंगी तेग ना ज़िरहबख्तर करेंगे

हम कुछ इस तरह जताएंगे नाराज़गी अपनी
बात तो करेंगे लेकिन बोहोत मुख़्तसर करेंगे

हमें आदत है अश्क देख अश्क हो जाने की
कोशिश नाकाम है,क्या खुद को पत्थर करेंगे

मेरी रागों में नहीं मौजूद कुछ सिवाय इश्क़ के
आप अपनी शमशीर मेरे लहू से कैसे तर करेंगे

जहां मिलेंगे मुरीद मासूमियत के उनकी
उनके दिए ज़ख्मों की नुमाइश उधर करेंगे

यक़ीन, फ़ुर्सत, हमदर्दी सब को दफ़्न करके
अपने कूचा-ए-दिल को दिल्ली शहर करेंगे

हम हो चले हैं असीर ए इश्क़ किसी के
यारों अब ज़िंदगी किस तरह से बसर करेंगे

बा खुदा जंग छेड़ बैठोगे खुद के साथ, अगर
तुम्हारा सलीक़ा कभी तुम्हारी नज़र करेंगे

~ Anas Saifi
B.Sc (H) Electronics
2nd Year

विश्वास

विश्वास की बातें करने वालों, क्यों भूल जाते हो इस बात को,
किसी का दिल तोड़कर, खो देते हो तुम किसी खास को।

विश्वास के नाम पर धोखा देना आसान लगता है,
टूटे हुए दिल को हर इंसान हैवान लगता है॥

दोस्ती के नाम पर सामने तो बनते है बहुत ही मीठे,
लेकिन पीठ के पीछे कड़वाहट के बीज क्यों है बोते।

फूल नही बन सकते गर तुम,कांटे भी कभी मत बनना,
विश्वास के नाम पर कभी गलती से भी न ठगना।

समय की मार तुम सहन न कर पाओगे,
अपना नाम तुम खुद मिट्टी में मिलवाओगे।

विश्वास हर रिश्ते की बुनियाद है,
इसे तोड़ने वाले सबसे ज्यादा बर्बाद हैं।

विश्वास के नाम पर हमने अपने आप को बहुत ठगवा लिया,
अब और नही, बस सबसे इंतक़ाम लेने का समय आ गया।

खुदा कभी न माफ करेगा धोखा देने वालों को,
कुत्ते की मौत मरेगा, जिसने धोखा दिया अपने यारों को।

विश्वास के नाम पर खंजर घोंपने वाले तो बहुत मिल जातें है,
मरते दम तक साथ देने वाले बहुत ही कम लोगों को मिल पाते हैं।

विश्वास ऐसी बुनियाद है इक, जो तोड़े वो शैतान है,
हम तो वो इंसान हैं, विश्वास ही जिसकी शान है।

ज़िन्दगी में कुछ भी कर, बस किसी का विश्वास मत तोड़,
ज़िन्दगी बहुत छोटी है मेरे दोस्त, इतना अभिमान मत कर।

~ Abhimanyu Garg
B.A. Prog.
1st Year

लफ्ज़ों में ज़रा सी रवानी चाहिए
फराज़ की थोड़ी मेहरबानी चाहिए

ज़माने को तलब है उसके होंठो की
मेरे होंठो को उसकी पेशानी चाहिए

ये ज़िंदगी तो गुज़र गयी जद्दोजहद में
जीने को एक और ज़िन्दगानी चाहिए

ज़िंदगी कुछ नहीं मैदान ए कर्बला है
यहाँ कदम कदम पे कुर्बानी चाहिए

एक दरिया ललकार रहा था प्यास मेरी
नतीजा ए हरकत अब उसे पानी चाहिए

बरकार हैं सासें, अभी ज़िन्दा हैं हम
ज़िंदगी में और क्या परेशानी चाहिए

तैयार हैं कई चहरे, कई किरदार मुझमें
मुझे कोई फ़साना कोई कहानी चाहिए

आसमाँ को देखनी ही हालत ए ज़मी
हवा को चादर ए अब्र हटानी चाहिए

बुझे हुए चराग भी रोशन हो जाएँ
अंधों को उसकी तस्वीर दिखानी चाहिए

यही बनाता है तुम्हें औरंगज़ेब हमें खिलजी
तुम्हें सारी रियासत, हमे सिर्फ रानी चाहिए

~ Anas Saifi
B.Sc (H) Electronics
2nd Year

क्या बात करते हो

जहां सीरत नहीं सूरत, इंसान नहीं दौलत की कीमत होती है,
वहां तुम उन्स की बात करते हो,
कहाँ से आए हो?
क्यूँ ऐसी निराधार बात करते हो!
अरे सुनो यहां कुर्सी की चाह में, हर रोज जंग जारी रहती है,
भूख यहां सड़कों पर, हर रोज बेबस सोती है,
ऐसे में तुम ईमानदारी की बात करते हो,
कहाँ से आए हो?
क्यूँ ऐसी निराधार बात करते हो!
जहां हर इंसान का मन भेद भाव से जकरा है,
औरत को जहां अब भी दोयम दर्जा मिलता है,
ऐसे में तुम समानता की बात करते हो,
कहाँ से आए हो?
क्यूँ ऐसी निराधार बात करते हो!
जहां शादी नहीं सौदेबाजी होती है,
कोठे पर जाते 'आप' हो,
चर्चा 'वैश्या' की होती है,
ऐसे में तुम चरित्र की बात करते हो,
कहाँ से आए हो?
क्यूँ ऐसी निराधार बात करते हो...

~ KM Ranjana
B.Sc (H) Zoology
3rd Year

काली रात

एक रात की बात है
कोई शहर जलता मिला
कुछ घर सुलगते मिले॥

कुछ लोग रोते मिले
जैसे आग में हो कोई इनका मरा
कई पास में हँसते मिले
मानो आँच को दी हो इन्होंने हवा॥

कुछ बगल में गुम थे खड़े
जैसे उनका घर था बचा हुआ॥
कितनो की थी याद जली
कितनो का था मन झुलसा

कुछ को चैन की साँस मिली
मानो सफल हुआ हो उनका रचा
कुछ सरकारी गाड़ी मिली
जैसे इनको चला था जल्दी पता॥

कुछ नेता भी आन पड़े
जैसे उनका हो कोई वोट कटा
एक रात थी उस छोटे शहर की
उस एक रात में क्या क्या घटा

~ Amit Kumar Sharma
B.A. Prog.
2nd Year

मॉडर्न महाभारत

यह युद्ध नहीं है युधिष्ठिर
जो तुम लड़ के जीतोगे
सवार नहीं हो रथ पे तुम
जो तुम अड़ के जीतोगे
यह 21वीं सदी है प्यारे
अब तुम मर के जीतोगे
यहाँ चीर-हरन तो आम बात है
काली यहाँ हर एक रात है
कौरवों की बस्ती है
यहाँ जीत नहीं यहाँ सिर्फ़ मात है
पर एक बात समान यहाँ पर
राजा, राजा के बेटे हैं
भीष्म पितामह ज़िंदा हैं
पर काँटों पर ही लेटे हैं
यहाँ हर मोड़ पर तुमको शकुनी भी मिल जायेगा
कत्ल करे या न करे पर खूनी भी मिल जायेगा
नहीं मिलेगा तुमको तो बस साथी नहीं मिलेगा
मिलने को तो फिर यहाँ जुनूनी भी मिल जायेगा
गान्धारी बनी इन्साफ़ की मूरत
मूरत बनकर ऐसी ऐंठी है
जिसकी आँखें बनना था
वो उन जैसा बन बैठी है
गौरव होगा तुमको सुनकर
यहाँ कौरव पान्डव एक ही हैं
तुम इसको महफ़िल कहते हो
यहाँ नाच व तान्डव एक ही है
आचार्य यहाँ पर सभी द्रोण हैं
पर अर्जुन जैसा कहाँ कौन है?
गली गली में देखो अब अँगूठों का भण्डार है
एक नहीं लाखों है लव्य, यह एकलव्य संसार है
हर गली के हर मोड़ पर
हर मात यहाँ पर कुंती है
दोनों इसके लाल हैं
दोनों में एक ही चुनती है
पैदा नकुल सहदेव हैं होते
दुर्योधन सा बन जाते हैं
यह दुस्साशन समाजी लोग शन्सोधन सा कर जाते हैं
कुछ और समान सी बातें हैं
जो कहो तुम्हे बतलाता हूँ
कुछ को सच ही मान लिया है
और कुछ को मैं झुठलाता हूँ
यहाँ हर चौराहा चक्रव्यूह है
अभिमन्यू का फँसा समूह है
सब बने बैठे हैं सारथी
और हर बच्चा यहाँ कर्ण क्यों है?
हर बच्चा यहाँ कर्ण क्यों है?

~ Rishi Suri
B.Sc (H) Chemistry
2nd Year

दिल्ली

यह मेरा दिल्ली शहर है
धुँए कि यहां दोपहर है
सूरज भी कहीं गुम है
हवा की नमी भी कहीं छम है
शहर कुछ धुंधला है
देखने से कोई बड़ा मसला है
गंदी चादर से यह लिपटा पड़ा है
अमीरों की दिल्ली का नक्शा बदला पड़ा है
कुछ बदली यह नेताओं की मैली चाल से
कुछ उस कारखाने के गंदे माल से
कुछ दिवाली के पटाखों की मार से
और कहीं उस रईस महंगी मोटर की कार से
कुछ पड़ोसी की जली पराली की बयार से
यह मर सी गई इंसान की मार से
कोई पी गया विष सांसों में घोलकर
किसी ने बचा ली एक कपड़े के खोल से
कोई आज भी आग सुलगाता मिला
चिता पर बैठ लकड़ी जलाता मिला
कुछ छोड़ शहर जल्दी निकल गए
कुछ हवा में दम घोंट के मर गए
लगता नहीं किसी को कोई मलाल है
बचा लो इस शहर को इसका बुरा हाल है

~ Amit Kumar Sharma
B.A. Prog.
2nd Year

किस्सा

हो किस्सा नरसी के भात का,
या सुदामा की कही बात का,
हो किस्सा द्रोपदी की लाज का,
कान्हा रहे सदैव तत्पर हैं।
फ़िर कैसा ये खेल नियती का
हो साथ उस राधा का
या आवाहन मीरा के गानों का
कुछ पूरा था उनमें, कुछ अधूरापन था कान्हा का ॥

~ Vanshika Rana
B.Sc (H) Mathematics
1st Year

इश्क लिखूँ या देश लिखूँ

क्या लिखूँ कुछ समझ नहीं आता
कलम हाथ में लिखना कुछ नहीं आता
देख देख कर परेशान हूँ इस ज़ालिम दुनिया को
उन नजारों को पन्नो पर बिखेरना नहीं आता

मै इश्क लिखूं या देश लिखूं
क्या क्या में इस कलम से विशेष लिखूं
जिस मिट्टी में पैदा हुआ उसके लिए कुछ श्रेष्ठ लिखूं
जो सबके मन को जीत सके ऐसा एक संदेश लिखूं

इंसानी दर्द लिखूँ या प्यार लिखूँ
मरते हुए इंसान की फ़रियाद लिखूँ
राम लिखूँ या रहीम लिखूँ
अटल या अब्दुल कलाम लिखूँ

देखा है मैंने जिनको वतन पर मरते हुए
उनके नाम एक पैगाम लिखूँ
बच्चियों की चीख, बेसहारों की भीख रहते हुए
कहो कैसे मैं इश्क़ और जाम लिखूँ

कलम उठाई कई बार
लेकिन वो हर बार रुक जाती है
जैसे ही मैं इश्क़ लिखूं
वो मेरे हाथ से फिसल जाती है

जब जब मैंने लिखा देश पर
कलम मेरी लिखती चली जाती है
छोड़ता भी हूं उसको तो
गुलामी की याद दिलाती है

कैसे भूलूं उन वीरों को
सर्वस्व निछावर करते जो
भूल अपने सारे सुख
देश के लिए मरते जो

लिखने को तो बहुत कुछ लिखूँ
लेकिन मैं लिखता ही कहाँ कुछ हूँ
जब जब मेरी कलम में स्याही आई है
मैंने वो पन्नों पर सजाई है
उसी के तहत आप लोगों तक
मैंने अपनी बात पहुँचाई है

~ Raghvendra Pratap Singh
B.Sc (H) Electronics
1st Year

बारिश का दिन

हां। हो रही थी बारिश उस दिन,
बाहर पानी की, आंखो से अश्कों की।
धूप का उजाला बाहर नहीं था,
आशा की किरण दिल में भी नहीं थी।
हवाओं का तूफान बाहर भी था,
पर मन के बवंडर से कुछ कम था।
वहां मोर के पंख खुल रहे थे,
यहां पट्टी अंधे विश्वास की खुल रही थी।
उधर छतों से जमा हुआ जल टपक रहा था,
पर जमी रंजिशें पलको से टपक रही थी।
उस हसीन बारिश से पत्ते तो धुल गए थे,
पर वो हसीन यादे नहीं धुल पा रही थीं।
बरखा में वो शाम तो ढल गई थी,
पर वो सुकून के पलों को ढलना अभी बाकी था।
बच्चों की खिलखिलाहट अभी जारी थी,
इधर तो आवाज़ में सिसकियों की बारी थी।
घुमड़ते घटाओ की गर्जना,
उमड़ते सवालों के शोर से धीमी थी।
हां ,उस दिन बारिश हो रही थी।

~ Sakshi Priyadarshini
B.A. Prog.
1st Year

मुस्कराते रहो

दर्द कैसा भी हो आंखें नम ना करो
रात काली सही कोई ग़म ना करो
एक सितारा बनो जगमगाते रहो
जिन्दगी में सदा मुस्कुराते रहो
बांटनी है अगर बांट लो हर ख़ुशी
ग़म ना जाहिर करो तुम किसी पर कभी
दिल की गहराई में ग़म छुपाते रहो
जिन्दगी में सदा मुस्कुराते रहो ।
अश्क अनमोल है खो ना देना कहीं
इनकी हर बूंद है मोतियों से हसीं
इनको हर आंख से तुम चुराते रहो ।
जिन्दगी में सदा मुस्कुराते रहो ।
फासले कम करो दिल मिलाते रहो
जिन्दगी में सदा मुस्कुराते रहो।

~ Garima Gupta
B.A. Prog.
2nd Year

गरीबी

भूखे पेट कभी सोके देखा है
बिन आँसू के कभी रोके देखा है
क्या झुग्गियों में कभी जलाया है, दिया तुमने
या सिर्फ अपने घर को हीं चमकते देखा है

सड़क पर घूमते बच्चों को देखा है
उनकी आंखो में कभी झांक कर देखा है
क्या उन्हें खिलाया कभी खाना तुमने
या सिर्फ अपने बच्चों का पेट भरते देखा है

कभी गरीब के चेहरे को हंसते देखा है
उसको मजबूरन मरते देखा है
क्या कभी बचा पाओगे उन गरीबों को
या सिर्फ इंसानियत को मरते देखा है

भूखे इंसान को कभी लड़ते देखा है
धर्म या जाति के नाम पे मरते देखा है
क्या कभी बोलेगी हमारी इंसानियत
या सिर्फ भगवान का नाम लेके देखा है

कभी किसी का जूठा खा के देखा है
खुले आसमान को चादर बना के देखा है
शुरुआत कभी खुद से करो
भीख की जगह रोजगार दो
अपना पेट भरके दुसरों का भरो
इंसानियत अपनी जिंदा रखो

~ Raghvendra Pratap Singh
B.Sc (H) Electronics
1st Year

असंभव कुछ नहीं

अगर चाहो नदी के दो किनारे मिल भी सकते है
मरूस्थल में कमल के दल हजारों खिल भी सकते है
तमन्ना हो अगर दिल में , इरादे हो अगर पक्के ,
हिलाओ तो जरा मन से ये पर्वत हिल भी सकते है ।
बबूलो पर रसीले आम के फल आ भी सकते है
सुरीली तान में बेजान पत्थर गा भी सकते है ।
असंभव कुछ नहीं संभावनाएं जोड़कर रखिए,
तुम्हारे हाथ से तारे जमीं पर आ भी सकते है ।

~ Garima Gupta
B.A. Prog.
2nd Year

असलियत

अक्सर नमाज़ी ही नमाज़ पढ़ने में देर करते हैं,
अपने मुल्क में तो इंसाफ़ करने में फाँसी देर करते हैं।

हम जो चाहें वो रब से मिल ही जाता है,
पर हम इंसान ही रब से दुआएँ माँगने में देर करते हैं।

नज़र वाले तो हिन्दुस्तान में सिर्फ़ हिन्दू मुसलमाँ करते हैं,
पर अंधे तो हर शख़्स में इंसान देखा करते हैं।

नफ़रतों का असर तो देखो, यहाँ तो हम सिर्फ बँटवारा करते हैं,
पर कुछ तो इस वतन के खातिर बर्फ़ में मर जाया करते हैं।

पता नहीं किस बात का हम इंसान तकब्बुर किया करते हैं,
यह जान कर की दुनिया के हर रास्ते कब्रिस्तान जाया करते हैं।

~ Bushra
B.Sc. (H) Chemistry
1st Year

फूल-कुसुम

फूल कुसुम की मृदुताओं से बेहतर
तुम मेरी रचनाओंसे बेहतर,
दिल में हलचल कर देती हो
तुम कुदरत की विपदाओं से बेहतर।

बहती शीतल सरिताओं से बेहतर
तुम मेरी ललिताओं से बेहतर,
घनी धूप जो संग रहती है
तुम पीपल वाली छाओंसे बेहतर।

अग्नि की ज्वालाओं से बेहतर
तुम कईं पुरानी हलाओंसे बेहतर,
जीवन के दुःख हर लेती हो
तुम सारी सुख सुविधाओं से बेहतर।

सुगंधित सब हवाओं से बेहतर
तुम मेरी कल्पनाओंसे बेहतर,
अमावस में जैसे चाँद चमकती
तुम झूठी-सच्ची सब कथाओं से बेहतर।

लहराती खूब फिज़ाओ से बेहतर
तुम सम्पूर्ण विश्व कि साराओं से बेहतर,
उम्र तलक तुम संग ही रहना
तुम जीवन की रेखाओं से बेहतर।

~ Gaurav Nailwal
B.Sc. (H) Chemistry
2nd Year

रण भूमि

शत्रुओं का हो प्रलय
पर न हार का विचार हो,
हाथ मे कृपाण हो
मस्तिष्क तेज़ धार हो।
रथ का वेग भेद जाए
सीमा, हवा न जो छू सकी,
समर बिगुल है बज चुका
अब आर हो या पार हो।
शंखाध्वनि से प्रबल
हौंसलों का शोर हो,
जो लक्ष्य है, वो स्पष्ट हो
मन विश्वास से विभोर हो।
अंतिम-अग्नि की मशाल
शत्रुओं में ही जले,
योद्धा जो ढेर हो इधर
धरती हिले, आँधी चले।
हो शोक का ही क्षण मगर
एकाग्र हर विचार हो,
समर बिगुल है बज चुका
अब आर हो या पर हो।
जो भीमकायी शत्रु है
जमीन फिर तटस्थ हो,
युद्ध का नियम है ये
जीवित रहो या नष्ट हो।
हो अल्प चाहे संख्या
फिर खुद पर स्वाभिमान हो,
सारागढ़ी की जंग हो
मूछों पे वो ही शान हो।
शीतल लगे, जो तन दिखे
मन ज्वालामुखी सा ज्वार हो,
समर बिगुल है बज चुका
अब आर हो या पार हो।
अदम्य साहस वीरता का
प्रमाण देकर जाता है,
है कला निपुण आज जो
कल रण में काम आता है।
जितना बहता है स्वेद आज
रक्त उतना ही कम लगता है,
जिसे कल की नींद चाहिए
वो आज ही तो जगता है।
तो सीमा रही हो कोई भी,
एक छलांग से ही लांघ दो,
पल रहा है मन में भय
अपनी शक्तियों से बांध दो।
है जंगलों का ऋण ये मुझपे
ये सिंह सी दहाड़ लो,
समर बिगुल है बज चुका
अब आर हो या पार हो।

~ Gaurav Nailwal
B.Sc. (H) Chemistry
2nd Year

पथिक

थक चुका है जो पथिक भी
जीवन में कुछ कर जाएगा,
अपने कष्टों के एहसासों से
पंछी बन उड़ जाएगा ॥

उलझ गए है जो विचार मन के
जल्द ही सुलझ जाएंगे,
अपने पावन एहसासों से
फिर समय उसका बदल जाएंगे ॥

भीषण काली रातों का भी
बहम जल्द मिट जाएगा,
उसका हमें सताने का भी
सिलसिला भी टूट जाएगा ॥

डलती गहरी रातें भी
अब कष्ट हमको नहीं देंगी,
बल्कि मीठे सपनों के
आगोश में हमको ले लेंगी ॥

मीठे सपनों के एहसास भी
नींदों में घुल जाएंगे,
नींदों की बेवफ़ाई के बदल
जल्द ही छट जाएंगे ॥

दुखों की बेड़ियां भी
जल्द ही खुल जाएंगी,
खुशियां भी बारात लिए
उसके घर दस्तक दे जाएंगी ॥

गिरकर उठना और संभलना
मनुष्य की प्रवृत्ति ठहरी,
अगर उसपर सितम हुए हो जयदा
तब उसको चोट लगती है गहरी ॥

सितम किए है जिन लोगो ने
हम उसके बड़े आभारी है,
उनकी हमारे जीवन में
बस इतनी हिस्सेदारी है ॥

~ Pawan Kumar
B.Sc. (H) Chemistry
2nd Year

आगाज़

ज्वलन उठी है आग में,
उठ तू भी अब तलाश में,
सूर्य की तपिश को चीर,
हवा का सीना फाड़ दे,
निकल पर्वतों को पीसते,
तू घाटियों को धूल कर,
बाजूओं को खोलकर,
तू युद्ध का आगाज़ कर।~2

तू है क्या ये जान ले,
मुठ्ठियों में आसमान ले,
हथेलियों पर जान ले,
आज मौत से भी खेल जा,
ये घोर शंखनाद है,
तू रुद्र का उन्माद है,
एक तीव्र हुँकार कर,
तू युद्ध का आगाज़ कर।~2

कड़कती बिजलियों में जोश है,
क्या तुझमे भी आक्रोश है,
बादलों को ले आगोश में,
शक्ति उसकी छीनकर,
तू गर्जना घनघोर कर,
तेरे तन में लावा बह रहा,
ज्वाला का तू निर्माण कर,
तू युद्ध का आगाज़ कर।~2

समन्दरों की चाल देख,
है जीना कैसे आज देख,
सुनामियों को भेद कर
लहरों को तू शांत कर,
मस्तकों के झुंड देख,
एक वार में शिकार कर
प्रशांत पर प्रस्थान कर,
तू युद्ध का आगाज़ कर।~2

रणभूमि की पुकार सुन,
तेरे मन की आवाज सुन,
म्यान में तलवार रख,
बुलन्द आवाज रख,
तरकशों में तीर भर,
तू शत्रु का विनाश कर,
रक्त से अभिषेक कर,
तू युद्ध का आगाज़ कर।~2

शत्रु शक्ति में मदमस्त है,
तू शक्ति से सशक्त है,
थकना नही अविराम चल,
शक्ति सारी कर इकठ्ठा,
एक झनझनाता वार कर,
ये आखिरी है युद्ध तेरा,
इसे आर कर या पार कर,
तू युद्ध का आगाज़ कर।~2

~ Ankit Mishr
B.Sc (H) Electronics
1st Year

बचपन की वो यादे

घर की गली अब खाली पड़ी रहती है
बचपन की बुलेट कोने में ख़डी रहती है
किसी के पास दो पल फुर्सत के नहीं
सबको पैसे कमाने की पड़ी रहती है
जो माँ शिकायतों की किताबें बनाती थी
वही बेटों की फ़िक्र में दरवाजे पे ख़डी रहती है
जहाजों के मालिक गुमनाम हो गए हैं
बारिश की नदियाँ खाली पड़ी रहती हैं
कभी राते गुजारते थे, साथ मिलकर अब
थोड़ा मिलने पर भी, नजर घड़ी पर रहती है
गायब हैं अचानक गुदगुदी वाली ऊँगली
क्योंकि वो अब फ़ोन पर अड़ी रहती है
रात के अँधेरे में छुप गयी है छुपन-छुपाई
ढूंढ़ने वाली निगाहें पबजी में गड़ी रहती है

~ Jatin Kumar
B.Sc. (H) Electronics
1st Year

क्या समझूँ मैं इसे?

इश्क या मेरा पागलपन,
विश्वास या मेरा अल्हड़पन,
क्या समझूँ मैं क्या समझूँ मैं इसे...

क्या समझूँ मैं इसे?
तुम्हारा बिन बताये मेरे सामने आना
और जब तुम्हे देखना चाहूँ, तो मुझे तुम्हारा तरसाना,
गर गलती से देख भी लूँ तो तुम्हारा मुह मोड़ लेना,
क्या समझूँ मैं क्या समझूँ मैं इसे...

क्या समझूँ मैं इसे?
तुम्हे अपना मानने की मेरी भूल है या मेरा भोलापन
यह मेरी मोहब्बत है या मेरा अन्धापन
कभी कुछ कह भी दिया करो
कुछ समझा भी दिया करो
तुम्ही बताओ क्या समझूँ मैं क्या समझूँ मैं इसे...

क्या समझूँ मैं इसे?
यह मेरा अन्धविश्वास है या मेरी कमजोरी
यह मेरा केवल फलसफा है या मेरी मजबूरी
यूँ मुह फेर के चली जाती हो
दिल को कुरेद के चली जाती हो
क्या समझूँ मैं क्या समझूँ मैं इसे...

~ Aditya Prajapati
B.Sc. (H) Chemistry
3rd Year

रात का सपना

उस मासूम से चेहरे का क्या खूब कहर था
अचानक गली से गुज़रा क्या खूब शहर था
मन था जिंदगी उसे बस देखने मे गुज़ार दूँ
मिली भी नींद में कम्बख्त क्या खूब पहर था
होठों की लाली पर दिल सँभल नहीं पाया
ज़िन्दा, लबों से लगाया क्या खूब ज़हर था
अमावस सी जुल्फों का नागिन सा लहराना
हवा का उन्हें साथ उड़ाना क्या खूब क़हर था
बेताबी थी उसके साथ बैठकर बातें करने की
हँसता देख सब भूल बैठा क्या खूब पहर था
जाम हाथों से पिलाती तो नशा उतर भी जाता
कम्बख्त आँखो से पिलाया क्या खूब ज़हर था

~ Jatin Kumar
B.Sc. (H) Electronics
1st Year

इंसान के बिना ही

इंसान के बिना ही ,
इंसान से बात किया करो ।

जिस बात के तागा तुमसे जुड़ा है ,
उसे औरों को न सुलझाने दिया करो ।

इंसान के बिना ही ,
इंसान से बात किया करो ।

अकेले लेकर उलझी पतंग ,
उतरना चाहो पार तरंग ।
लाखों बार ज़रूर गिरोगे ,
करोड़ों बार मुँह फेरोगे ॥

सफलता की होगी दिव्य संभावना ,
इसलिए आस नहीं छोड़ा करो ।
इंसान के बिना ही ,
इंसान से बात किया करो ।

जो साथ मिलकर डोरी सुलझाएँ ,
सुलझाएँ शायद वही उलझाएँ ?
गलत व्यक्ति चयनित करोगे जहाँ ,
अपने माँझे से डोरी काटोगे वहाँ ।

इसलिए उलझी पतंग सुलझाओ ,
पर डोरी माँझा मत बनाओ ।
स्वयं से सुलझाई जो डोरी ,

फिर आकाश से नीचे गिरा दिया करो ॥

इंसान के बिना ही ,
इंसान से बात किया करो ।

स्वयं से वार्ता में है जादुई शक्ति,
न काम आवे औरों की भक्ति ।
आत्मचिंतन है श्रेष्ठ जगत में ,
मोह और मिथ्या त्याग करो।

इंसान के बिना ही ,
इंसान से बात किया करो ।

~ Sakshi Singh
B.Sc. (H) Chemistry
1st Year

पता नहीं क्यों? पर दिल पे लगता है!!

पता नहीं क्यों पर ये दिल पे लगता है
वो दाग वो ज़ख्म देकर उसे क्या मिलता है
पता नहीं क्यों पर ये दिल पे लगता है।

खुशी से खिलखिलाती वो हँसी उसकी
वो मासूम-सा चेहरा उसका
निकलता है जब घर से, चाँद को भी रोशन कर देता है
लेकिन पता नहीं क्यों उनको ये चुभता है
पता नहीं क्यों पर ये दिल पे लगता है।

वो रात भर कहाँ थी, उसे खुद भी नहीं पता
अब क्या उसे होश आना था
जिसे ज़िंदा जलाकर तुमने कहीं फेंक दिया था
उसे वहाँ लेकर जाना, जहाँ का उसे कुछ पता ना हो
फिर उसके साथ वो करना, जिसकी उसे उम्मीद भी नहीं थी
उसे ज़ख्म देना जिसकी वो कभी हकदार भी नहीं थी
उसके भरोसे और इज्ज़त की धज्जियां उड़ाना
ताकि वो कभी उठकर तुम्हें वापस जवाब ना दे सके
पता नहीं क्यों पर ये दिल पे लगता है।

चलो माना तुम्हारी सोच छोटी थी
माना कि तुम्हें किसी की खुशी खलती थी
माना कि तुम्हारे घमंड पे लगती थी
पर जब गलती सिर्फ तुम्हारी थी
फिर क्यों इतनी बेशर्मी थी
पता नहीं क्यों पर ये दिल पे लगता है।

फिर उठाई जाती है इंसाफ की आवाज़
उस लड़की, उस बेटी, उस माँ, उस औरत के हक में
जो इस बेशर्मी की शिकार हुई
ताकि इंसाफ मिल सके
इंसाफ ऐसे नहीं मिलेगा, सिखाना पड़ेगा
हर एक बच्चे को कि कैसे जीते हैं जिंदगी इंसानों की तरह
लड़कियों को कपड़े ढंग के पहनने की सलाह देने वाले लोग
अपनी और अपने बच्चों की सोच ढंग की रखो
अपना देखने का नज़रिया ढंग का रखो
फिर शायद इंसाफ की भीख ना मांगनी पड़े

वो दाग वो ज़ख्म देकर उसे क्या मिलता है
पता नहीं क्यों पर ये दिल पे लगता है।

~ Urvashi Chavla
B.Sc. (H) Chemistry
1st Year

हमारा दिल जलाता था, वही फिर याद आता है,
हमें जो याद आता था, वही फिर याद आता है।

मिरी तस्वीर लटकी देख कर, घर चीख कर बोला,
"जो घर को घर बनाता था, वही फिर याद आता है।"

हमें वो याद आएँ जो, हमें भी याद करते हों,
मगर जो भूल जाता था, वही फिर याद आता है।

अरे फागुन, मुए लानत है तुझ पे, इस बरस फिर से,
तू जिसकी याद लाता था, वही फिर याद आता है।

जिसे गर चोट लग जाए, हमारा ख़ून रिसता था,
जो मेरी जाँ से जाता था, वही फिर याद आता है।

जिसे आभास होता था, हमारी धड़कनों का, जो,
हमें ज़िंदा बताता था, वही फिर याद आता है।

~ Abhay Shukla
B.Com (H)
1st Year

तेरी याद

निष्ठुर नयनों से, नम विदाई,
हृदय विदारक, वही परछाई,
भूलने के लाखों, जतन किये गिनके,
याद तुम्हारी, फिर भी आई।

नन्ही सी तेरी, वो किलकारी,
गोद बदलना तेरा, बारी-बारी,
कंधों पर से तेरा, छुप के तकना,
फुर्र! हो जाती सबकी, थकान सारी।

खबड़ मिली जब कि, तुमको खोया,
नींद बहुत थी पर, मैं न सोया,
काल-चक्र का, हुआ प्रहार मुझ पर,
घायल न था, फिर भी फुट कर रोया।

तेरे बिन जी तो, किसी का नहीं लगता,
बस खुश रहे, जहाँ पर भी तु रहता,
ईश्वर करे कि, नाम जब कभी तेरा आये,
"तन्मय-ता" से सब ले, उसे हँसता-हँसता।

~ Durgesh Kumar
B.Sc. (H) Electronics
2nd Year

पागलपन

पागलपन किसे कहा जाएगा?

जब सूखे पेड़ों को आसपास की मायूसी इतनी असहनीय हो जाएगी कि अमर्ष उनकी सूनी टहनियों से आख़िरकार कोंपल बन कर फूट पड़ेगा?

जब औरतें मज़ाक बनकर हर रोज़ ख़ुद को इतना गिरा लेंगी कि एक दिन सारी ज़िल्लत बाँध तोड़ कर उन्हें पाताल में नई दुनिया बसाने को बहा ले जाएगी?

जब क़ैदियों को एक ज़माने बाद सूरज देखने को बख़्शा जाएगा तो वो हिक़ारत से उसकी ओर थूक देंगे और अंधेरे को कंधों पर बिठा कर चल पड़ेंगे?

जब कोई वेश्या पुकारे जाने पर गर्व महसूस करेगा क्योंकि वह उस महान और अदमनीय समाज की बौद्धिक विरासत का एक पल के लिए ही सही, अभिरक्षक बनने का सौभाग्य प्राप्त कर रहा होगा?

जब मुझे क्रांति इतनी ज़रूरी लगने लगेगी कि जब-जब तुम कातरता से मुझसे शांति माँगोगे, मैं तुम्हें केवल विद्रोह की चादर में लिपटा हुआ भविष्य दे पाऊँगी क्योंकि मेरे लिए वही सुकून का अकेला सबब बन चुका होगा?

तो क्या पागलपन बुरा है? या वह केवल इस 'बसी-बसाई मासूम' दुनिया के लिए ख़तरनाक है?

~ Amrisha Rai
B.A. (H) English
2nd Year

सूर्यास्त

एक वास्तविक सूर्यास्त वो होता है, जब आप एक लम्बी गहरी साँस लेते हुए अपनी दोनों आँखों को मूँदते हैं, और फिर लाल-आसमानी रंग के क्षितिज में फैले उस बेहतरीन दृश्य को देखते हुए अपनी आँखों को धीरे-धीरे खोलते हैं। ठीक उसी समय आपकी सारी अन्तर्निहित भावनाएं(दुःख/सुख) उस ढ़लते हुए सूर्य में समाहित होने के लिए बाहर आने लगती हैं। जैसे-जैसे सूर्य उस पावन क्षितिज की गहराई में समाता चला जाता है, आपकी भावनाएँ भी आपके हृदय से ओझल होने लगती हैं। तब एक समय ऐसा आता है जब आप अकेले रह जाते हैं, और आपका मस्तिष्क एकदम शान्त और अप्रतिम प्रकृति में तैर रहा होता है, और आपके हृदय की धड़कन शिथिल पड़ने लगती है। आप एक शून्य की तरह प्राकृतिक सौन्दर्य को निहार रहे होते हैं। धीरे-धीरे आपके हृदय की धड़कन इतनी मन्द हो जाती है की हर एक मिनट में आप अपनी धड़कन मात्र एक बार सुनते हैं, और तब आप महसूस करते हैं उन अतुलनीय पुष्पों के सुगन्ध को, घोसलों को लौट रही चिड़ियों की चहचहाहट को, आखिरी दौर में लगे भौरों के गुँजन को, त्वचा पर पड़ रहे रक्तवर्णित शीतल ढ़लते सूर्य के प्रकाश की किरणों को, अविरल तरंगों में बह रहे करोड़ों मधुर संगीत को, अनन्त तक फैले आकाश को, क्षितिज में फैले लाल-आसमानी अथाह सागर को, मस्तिष्क से प्रवाहित होते लाखों विचारों को और सबसे महत्वपूर्ण आप महसूस करते हो स्वयं को, स्वयं की वास्तविकता को और स्वयं में अन्तर्निहित असीम ऊर्जाओं को।

~ Ankit Mishr
B.Sc. (H) Electronics
1st Year

कहीं पायल सुनाई दे रही है,
छनक जिसकी दुहाई दे रही है।

दिमाग़ो-दिल नहीं अपनी जगह पर,
हमें ख़ुश्बू दिखाई दे रही है।

सियह रातें, सियह कितनी ये लिक्खूँ,
ये हिम्मत रोशनाई दे रही है।

हमारे दर्द को आराम ना हो,
मुहब्बत यूँ दवाई दे रही है।

~ Abhay Shukla
B.Com. (H)
1st Year

श्रवण कुमार

(दिल्ली या अमुमन किसी शहरों के सड़कों पर भीख माँग रहे
बच्चों की स्थिती को प्रतिबिंबित करती हुई पंक्तिया हैं,
जिसमें अलग-अलग दृष्टिकोण दिखाये गए हैं)

लोभी नयन,
अधनंग बदन,
नकली रुदन,
फटे वसन,
घिसे चरण,
ढीठ कर्ण,
कुछ अजीब हैं,
अपने श्रवण कुमार।

सूखे अधर,
भीगे नजर,
बेबस स्वर,
मिजाज अल्हड़,
उलझे डगड़,
चित्त भँवर,
कुछ अजीब हैं,
अपने श्रवण कुमार।

धुंधले स्वप्न,
अनंत प्रयत्न,
ढूंढे भोजन,
चले योजन,
गुजरे यौवन,
शून्य प्रयोजन,
कुछ अजीब हैं,
अपने श्रवण कुमार।

जीवन समर,
सीखें अगर,
छंटेगी धूसर,
आएगी सहर,
रहें प्रखर,
जायेंगे सँवर,
कुछ अजीब होंगे,
अपने श्रवण कुमार।

~ Durgesh Kumar
B.Sc (H) Electronics
2nd Year

संस्कृत का सिमटता परिपेक्ष्य

संस्कृत का सबसे पुरानी भाषा होने पर कई साहित्यकारों में, हिब्रू व तमिल को लेकर अंतर्विरोध है, परंतु यह प्रमाणित है कि आरंभ से अपने मूल स्वरूप में विद्यमान रहने वाली संस्कृत सबसे पुरानी भाषा है, तथा महर्षि पाणिनि द्वारा रचित "संस्कृत व्याकरण" अब तक की उपलब्ध किसी भी भाषा के व्याकरण से प्राचीन, प्रामाणिक, तथा कहीं अधिक सैद्धांतिक है।

संपूर्ण संस्कृत व्याकरण आधुनिक से आधुनिकतम तथा प्राचीन से प्राचीनतम स्वर विज्ञान से मेल खाता है। संस्कृत का स्वर विज्ञान इतना विस्तृत है, कि इसके उच्चारण में कोई त्रुटि-भेद नहीं हो सकता। आपने ध्यान दिया हो तो देखा होगा कि, बाहुबली के मंत्रोच्चार वाले दृश्य में हिंदी Dubbed Version की भी lip-sing सामान तरीके से होती है। इसकी वर्णमाला इस रूप में सुसज्जित है कि संपूर्ण स्वर-तंत्र का उपयोग वैज्ञानिक तरीके से होता है। यही प्रमुख कारण था कि टॉकिंग कंप्यूटर के लिए संस्कृत को सबसे उपयुक्त भाषा माना गया, तथा इसके व्याकरण के वैज्ञानिकता तथा सटीक सैद्धांतिकता के कारण कृत्रिम बुद्धि (Artificial Inteligence) की कोडिंग के लिए भी संस्कृत को सर्वाधिक उपयुक्त भाषा माना गया है। यदि हमारा सौभाग्य रहा और इस क्षेत्र में कहीं क्रांतिकारी परिवर्तन हुए तो "Syntax Error" के स्थान पर "वर्तनिः दोषम" पढ़ने को मिल सकता है।

हमारे प्राचीन गणितज्ञ भी संस्कृत का बखूबी उपयोग करते थे, "कटपायदि श्रेणी" जो विश्व की प्राचीन "कूट-भाषीय प्रक्रिया" अर्थात "Hashing Algorithm" में से एक है, इसके माध्यम से गोपी-कृष्ण के संबंध में कहा गया एक श्लोक पाई(π) की दशमलव के 31 स्थानों तक सटीक मान बताता है।प्राचीन गणितज्ञ माधवाचार्य जी की "माधवाचार्य की ज्या(sine) श्रेणी" के एक संपूर्ण श्लोक तथा कटपयादी श्रेणी के मदद से 24 अलग-अलग कोनों के सटीक त्रिकोणमितीय मान निकलते हैं।

बात अगर इसके स्रोतों तथा उपलब्धता की करें तो संस्कृत साहित्य का अपार भंडार है, धार्मिक किताबों सहित विज्ञान व साहित्य की अनेका-अनेक प्रशाखाओं की पुस्तकें लिखी गई है। हमारे वेदों की कई ऋचाओं का आजतक सटीक अनुवाद नहीं हो सका है, जो अपने अंदर आधुनिकतम संभावनाएं समेटे बैठी है। बस संस्कृत प्रभाग आधुनिक विज्ञान तथा साहित्य के अद्यतन की राह देख रहा है। महाकवि कालिदास ने जिस कालखंड में "मेघदूतम", "अभिज्ञान शाकुंतलम्" जैसे महाकाव्य की रचना की उनकी दूर-द्रष्टव्यता की कोई तुलना नहीं है।

संपूर्ण अध्ययन से इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है, कि संस्कृत जिसकी अपनी सबसे प्रमाणिक, संस्कृत व्याकरण है, महर्षि पाणिनि, कात्यायन, महर्षि पतंजलि, गणितज्ञ माधवाचार्य, महाकवि कालिदास जैसे सत्पुरुषों द्वारा रचित ज्ञान भंडार है, AI, मेडिटेशन, योगा जैसे क्रांतिकारी क्षेत्रों में अपार संभावनाएं हैं, जन-भाषा के लिए भूमि तैयार करने की क्षमता है, सिर्फ संस्कार तक सिमटकर अपनी प्रमाणिकता सिद्ध करने की होड़ में नहीं रह सकती। हमारी पीढ़ी को इस बारे में एक बार तो सोचना हीं चाहिए।

॥इति श्री॥

~ दुर्गेश कुमार
अभियांत्रिकी विभाग,
द्वितीय वर्ष

PHOTO GALLERY

ALKA SINGH
B.A. (Prog.)
3rd Year

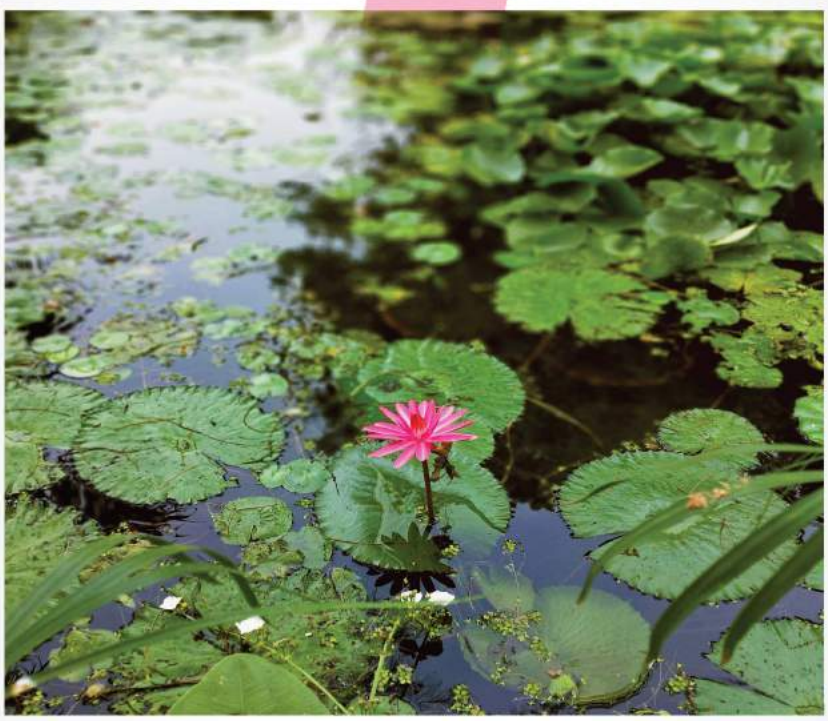

DEEPAK TIWARI
B.Sc.(H) Chem
2nd Year

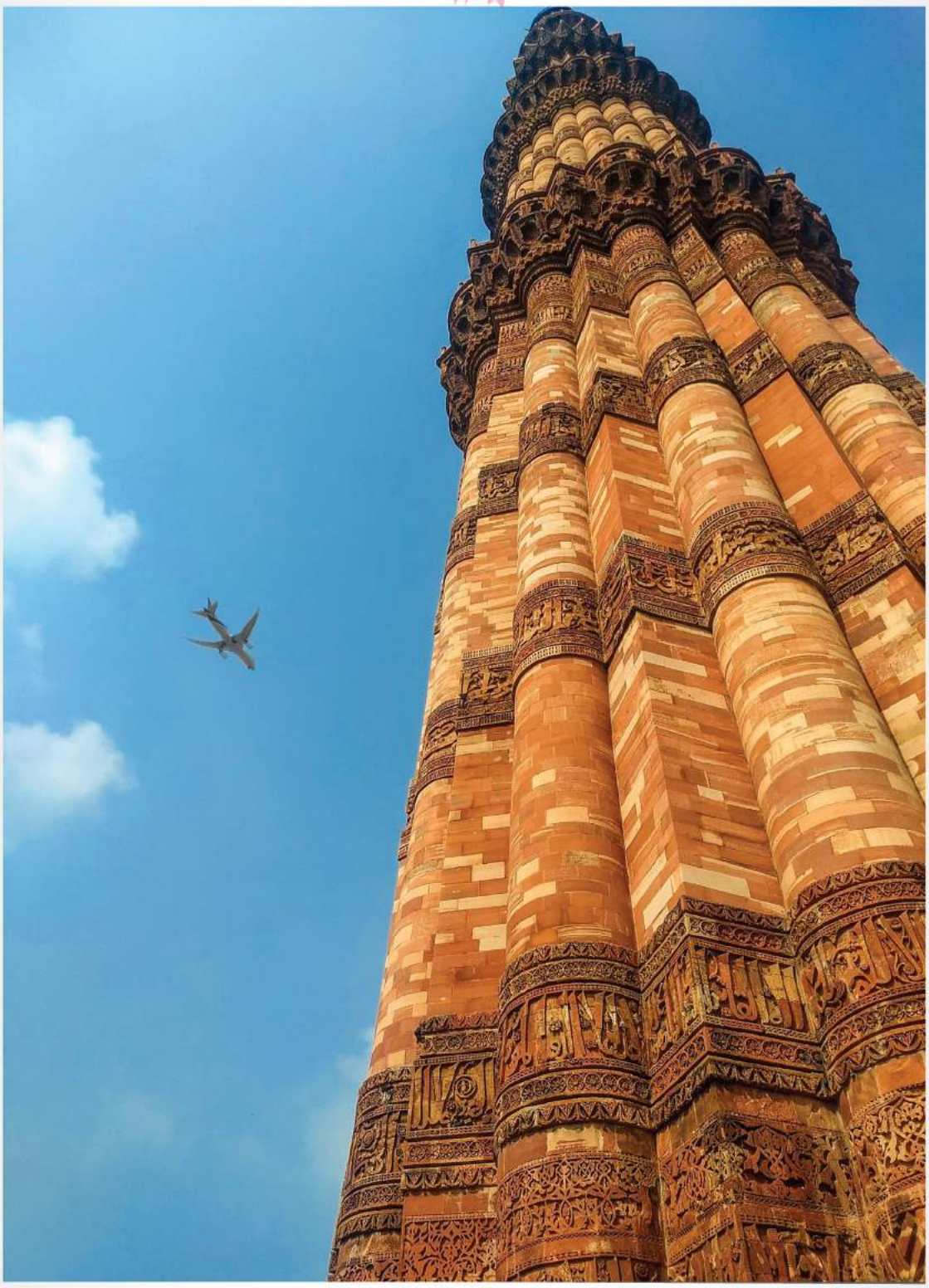

ALKA SINGH
B.A. (Prog.)
3rd Year

DEVANSH DALMIA
B.Sc.(H) Elec.
2nd Year

DEVANSH DALMIA
B.Sc.(H) Elec.
2nd Year

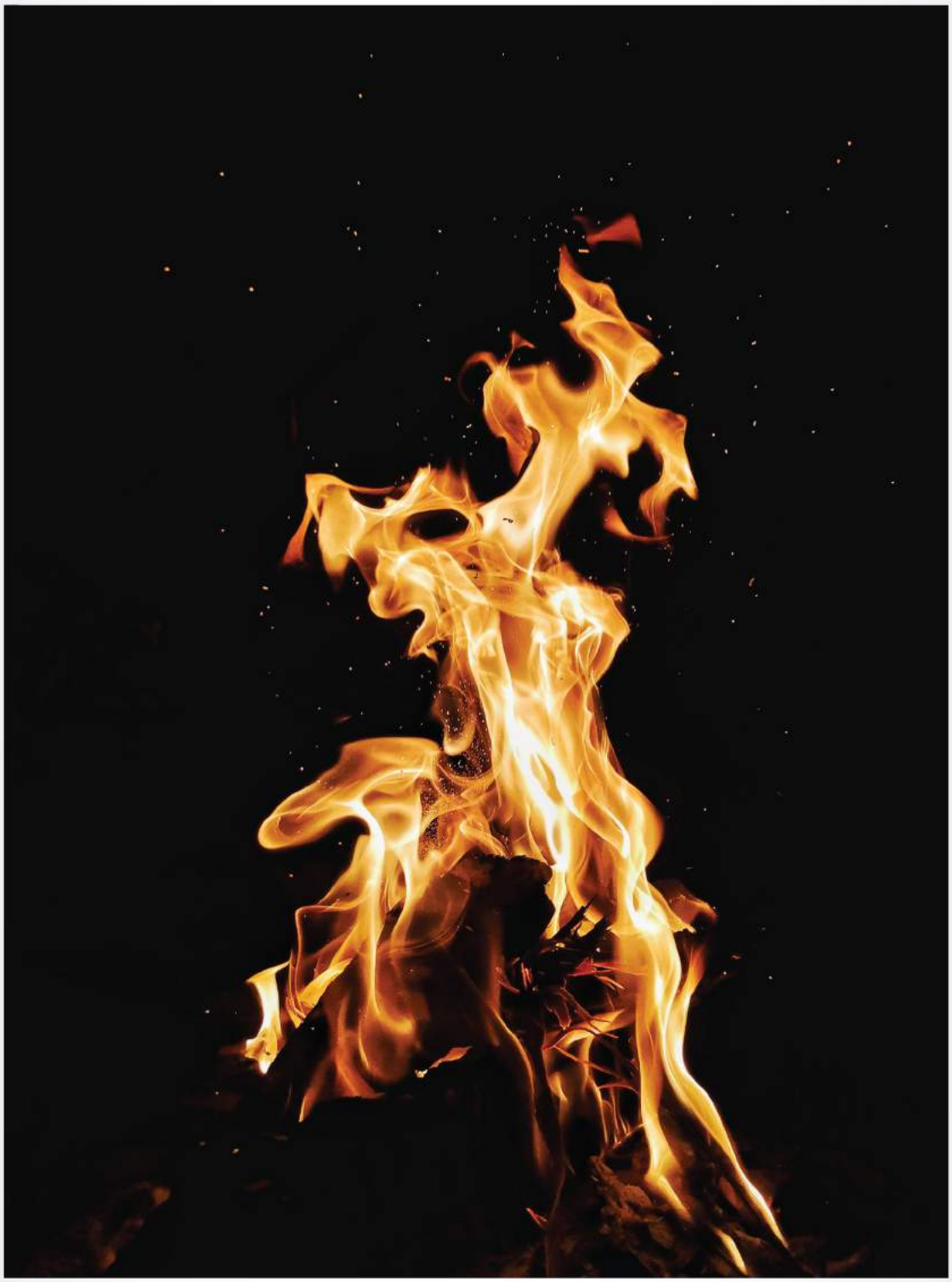

KARAN ARORA

B.Com.(H)

3rd Year

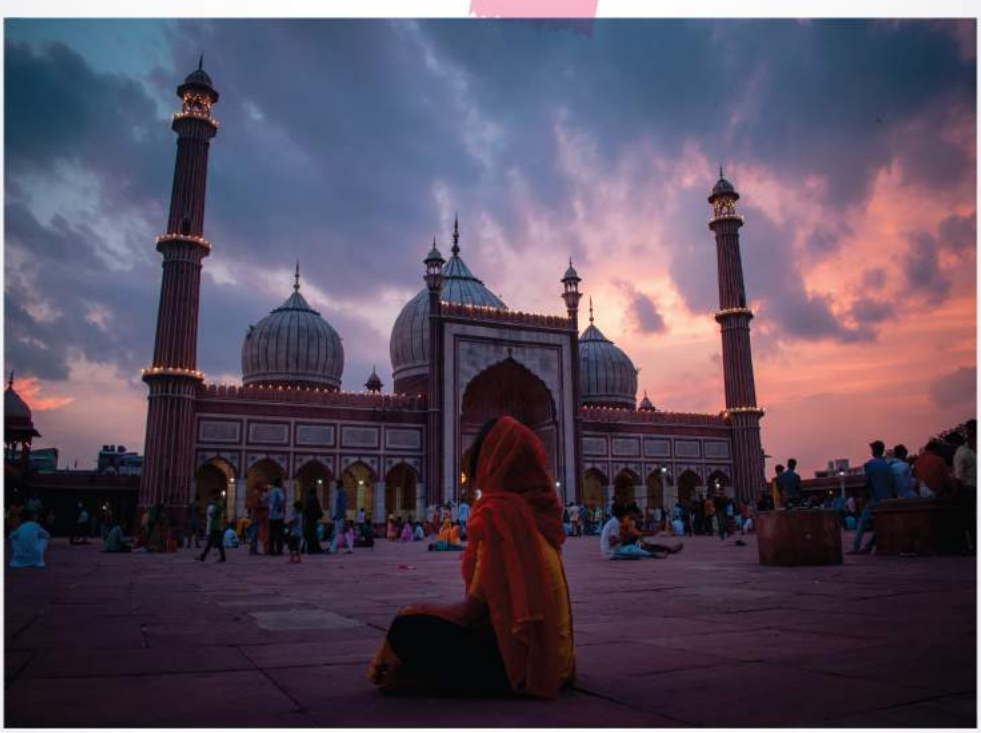

KARAN ARORA
B.Com. (H)
3rd Year

KARAN ARORA
B.Com. (H)
3rd Year

MAHIPAL INKHIYA
B.Sc.(H) Chem
2nd Year

PAURAV GULATI
B.Sc.(H) Physics
3rd Year

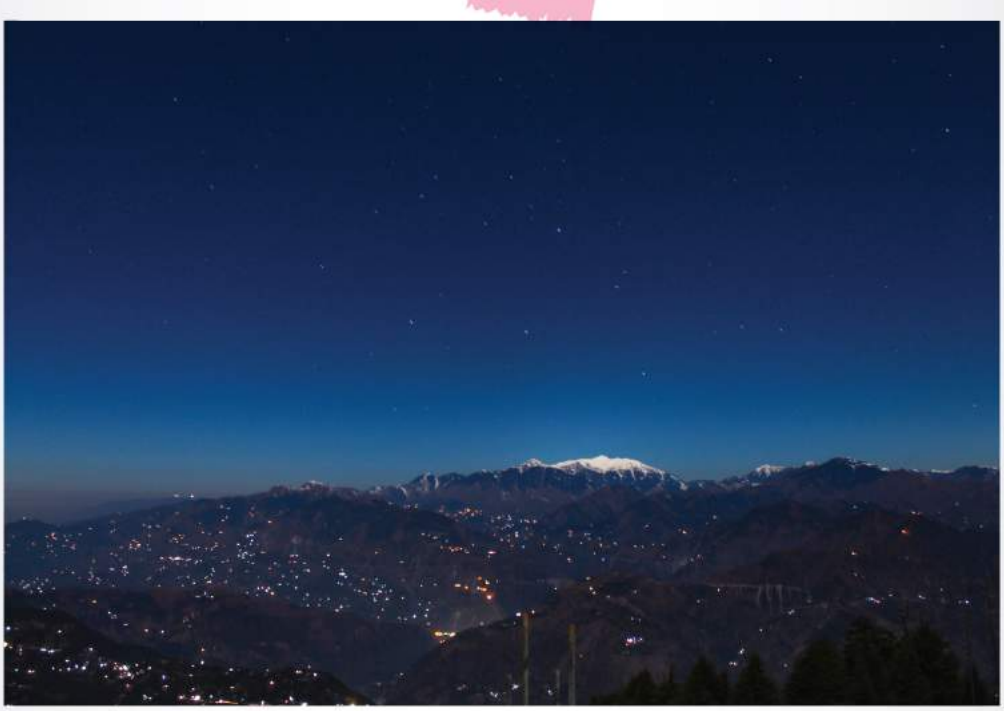

PAURAV GULATI
B.Sc.(H) Physics
3rd Year

RITESH KUMAR SAH
B.Sc.(H) Zoology
3rd Year

RASHI PANDEY
B.Sc.(Prog.) PSCS
1st Year

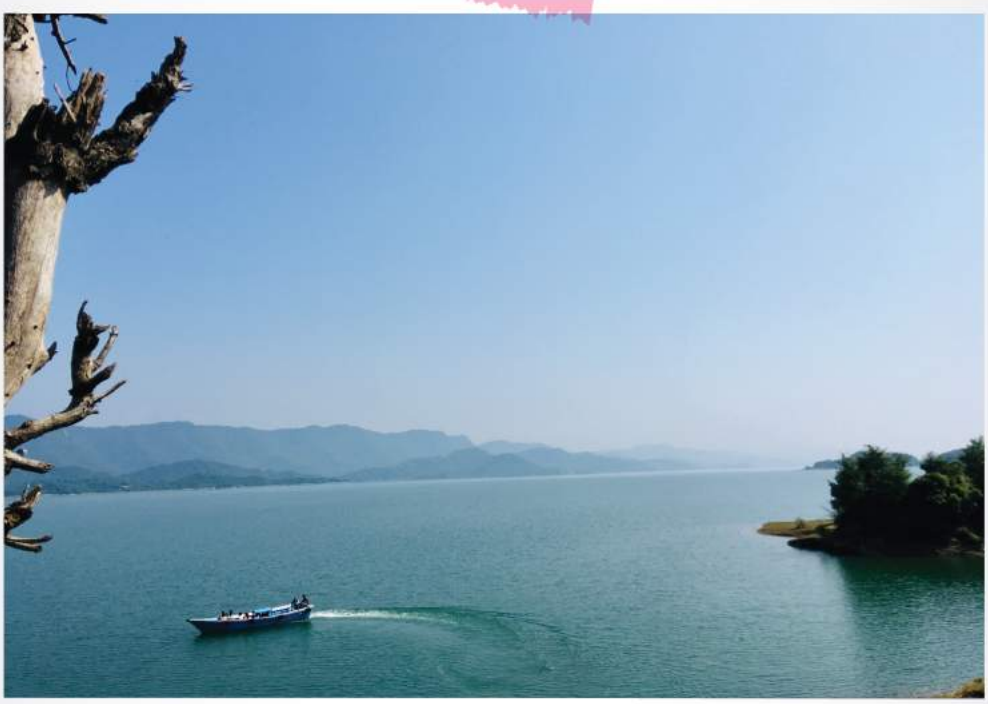

RITESH KUMAR SAH
B.Sc.(H) Zoology
3rd Year

ROHAN BAHL
B.Sc.(H) Zoology
3rd Year

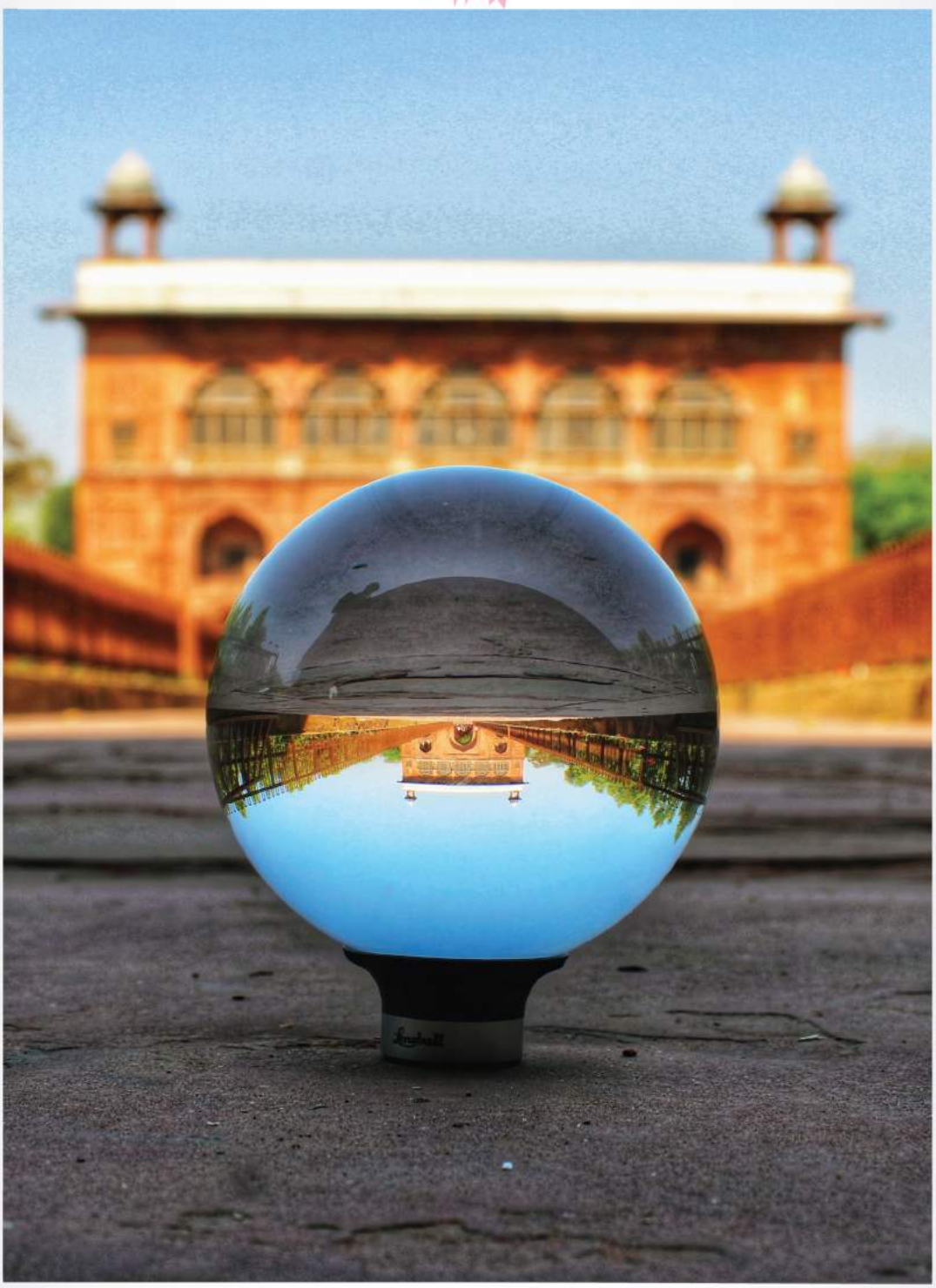

SATYABRATA DAS
B.Com.(H)
2nd Year

SATYABRATA DAS
B.Com.(H)
2nd Year

Deen Dayal Upadhyaya College

University of Delhi

Sector 3, Dwarka, New Delhi-110078

Website : https://dducollegedu.ac.in

Email : dducollegeoffice@gmail.com

: principaldducollege@gmail.com

Telephone : 011-25099380, 25099381

Back Cover: Dipanshu

Front Cover: Karan Arora